MPEDA

समाचार पत्र

खंड VI संख्या 11 फरवरी 2019

ISSN 0245-7059

पृष्ठ 3

बंगाल मत्स्य उत्सव - 2019

पृष्ठ 15

गुणवत्ता जलकृषि उत्पादन पर क्रेता-विक्रेता बैठक

पृष्ठ 20

कैप्चर फिशरीज के लिए एमपीईडीए योजनाओं को लोकप्रिय बनाने हेतु आयोजित बैठक

www.mpeda.gov.in

CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years, And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the success and profitability of the Indian Shrimp Industry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.

CPF-TURBO PROGRAM -
Pioneering Successful and Profitable Shrimp Aquaculture

विषय सूची

खंड. VI, संख्या. 11, फरवरी 2019

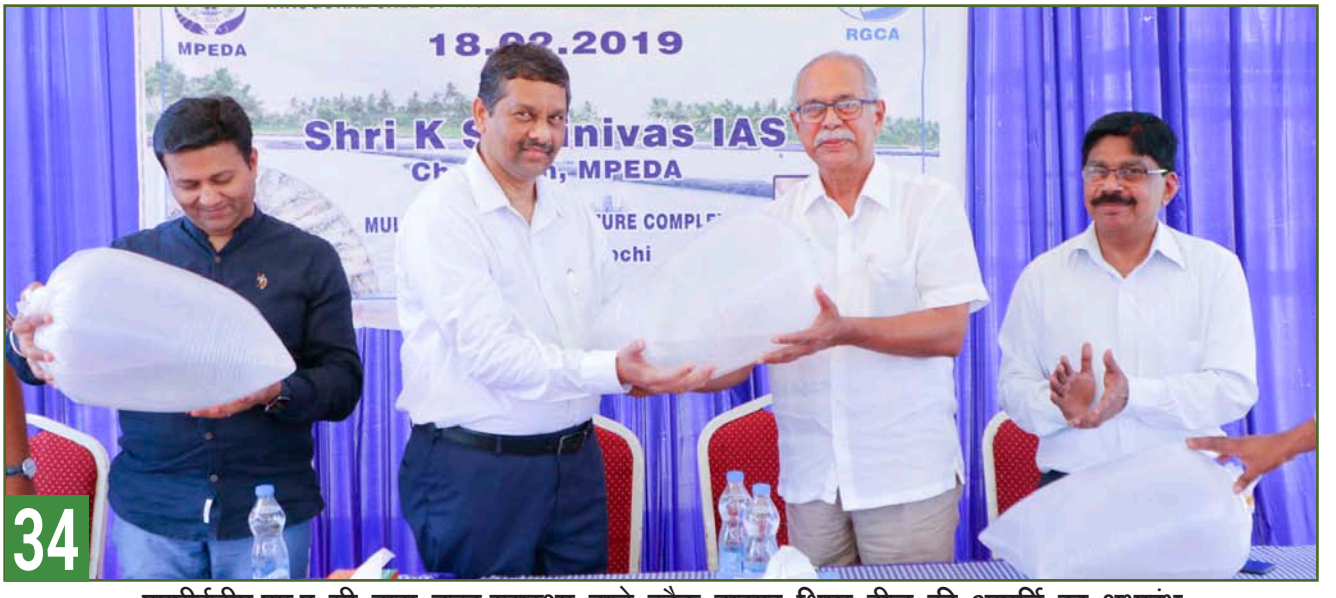

34 एमपीईडीए-एम ए सी द्वारा उच्च-स्वास्थ्य वाले ब्लैक टाइगर श्रिम्प बीज की आपूर्ति का शुभारंभ

09 समुद्री मत्स्य लैंडिंग की मुख्य विशेषताएं

15 गुणवत्ता जलकृषि उत्पादन पर क्रेता-विक्रेता बैठक

17 नेटफिश द्वारा बन्दरगाह सफाई

20 कैप्चर फिशरीज के लिए एमपीईडीए योजनाओं को लोकप्रिय बनाना

24 स्कूल के छात्रों के लिए जागरूकता कार्यक्रम

41 भारत लगातार चौथे वर्ष भी यू एस के लिए श्रिम्प का शीर्ष निर्यातक

इस प्रकाशन के विद्वत्तापूर्ण लेखों में व्यक्त विचार एमपीईडीए के विचार नहीं है, यह सिर्फ लेखक के विचार हैं।
इस प्रकाशन के विद्वत्तापूर्ण लेखों के जानकारी की सटीकता की ज़िम्मेदारी लेखकों पर निहित हैं,
यह न ही एमपीईडीए और न ही संपादकीय गण की ज़िम्मेदारी है।

एम.पी.ई.डी.ए
खंड VI / संख्या. 11 / 2019 फरवरी समाचार पत्रिका

संपादक मंडल

श्री टी. डोला शंकर, आईओएफ़एस
निदेशक (वि.)

श्री बी. श्रीकुमार
सचिव

श्री पी. अनिल कुमार
संयुक्त निदेशक (अक्वा)

श्री के.वी. प्रेमदेव
उप निदेशक (विपणन संवर्धन)

डॉ. टी.आर. जिबिन कुमार
उप निदेशक (एमपीईडीए रत्नागिरी)

संपादक
श्री डॉ. एम.के. राम मोहन
संयुक्त निदेशक (वि.)

सह संपादक
श्रीमती के.एम. दिव्या मोहनन
वरिष्ठ लिपिक

संपादकीय सहयोग
बिवर्ल्ड कॉर्पोरेट सोल्युशंस लिमिटेड
166, जवहर नगर, कड़वन्त्रा,
कोच्ची, केरल, भारत- 682 020
फोन: 0484 2206666, 2205544
www.bworld.in, life@bworld.in

लेआउट
रोबी अंबाड़ी

कवर फोटो
डॉ. टी.आर. जिबिन कुमार

www.mpeda.gov.in
support@mpeda.gov.in

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण की ओर से श्री बी श्रीकुमार, सचिव द्वारा मुद्रित और प्रकाशित
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए हाउस, पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036, फोन: +91 484 2311979

द्वारा प्रकाशित
एमपीईडीए हाउस,
पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036

प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्ची - 682 017 में मुद्रित

आप के लिए

के.एस. श्रीनिवास आईएएस
अध्यक्ष

प्रिय मित्रों,

एमपीईडीए ने दिसंबर 2018 में कैप्चर मात्स्यिकी में पहले मील कनेक्टिविटी गैप की पहचान करने के लिए एक पणधारी बैठक का आयोजन किया। इसके अलावा, एमपीईडीए ने विश्व स्तर के मानकों के लिए हर राज्य के कम से कम एक मत्स्यन बंदरगाह की पहचान और उन्नयन करने हेतु राज्य स्तर पर विशिष्ट कार्य योजना पर चर्चा करने के लिए एक-एक तटीय राज्यों के साथ परामर्श किया। राज्य विभागों के साथ विचार-विमर्श बहुत उपयोगी था और राज्यों ने इस पहल के लिए पूरे दिल से समर्थन देने का आश्वासन दिया। उन्नत किए जाने वाले बन्दरगाहों को पहले ही पहचान कर ली गई है। कुछ ही समय के भीतर, एमपीईडीए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करेंगे।

एमपीईडीए-आरजीसीए के ब्लैक टैगर हैचरी के बहु प्रजाति जलकृषि कॉम्प्लेक्स, वल्लारपाडम, कोच्ची ने महीने के दौरान ब्लैक टैगर बीजों के उच्च स्वास्थ्य के बीज की आपूर्ती प्रारंभ की है। यह कदम निश्चित रूप से प्रजातियों की खेती को पुनर्जीवित करेंगे जो जो विदेश में आला बाजार का लाभ उठाएंगे। दूर के दोहन के लिए एक कार्यवाही के रूप में जल संसाधन जैसे ट्यूना, कोचीन शिपयार्ड द्वारा निर्मित चार मत्स्यन जहाजों की पहली बैच को राज्य मात्स्यिकी विभाग, तमिलनाडु को हस्तांतरित किया गया, जिसका उद्देश्य मन्नार और पल्क खाड़ी क्षेत्र में संचालित ट्रॉलर को बदलना है।

एमपीईडीए ने राज्य से मध्य पूर्व के बाजार तक जीवित और ठंडी समुद्री उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने हेतु आगे की रास्ता खोलने के वास्ते केरल के चार हवाई अड्डों के अधिकारियों के साथ एक परामर्शी बैठक भी की। केरल से अच्छी हवाई कनेक्टिविटी और एक विशाल संजातीय भारतीय आबादी के साथ मध्य पूर्वी देशों में राज्य से ताजा समुद्री खाद्य के निर्यात की अपार संभावनाएं हैं। इस पर आगे बढ़ने के लिए एमपीईडीए ने पणधारियों के साथ लगातार परामर्श लेंगे।

मूल्यवर्धन को प्रोत्साहित करने और मूल्य वर्धित समुद्री उत्पादों के उत्पादन की दिशा में कर्मचारियों की दक्षता बढ़ाने हेतु, एमपीईडीए ने महीने के दौरान मुंबई, वेरावल, तूत्तिकोरिन और भीमावरम में समुद्री खाद्य के मूल्यवर्धन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। ये कार्यक्रम वियतनाम के प्रसंस्करण विशेषज्ञों द्वारा निर्देशित किए जा रहे हैं, जो प्रसंस्करण इकाइयों में समुद्री खाद्य के मूल्यवर्धन पर पर्याप्त प्रशिक्षक बनाने में सहायक होंगे।

धन्यवाद।

दावा : पाठकों से अनुरोध किया जाता है कि वे इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी उत्तर के लिए किसी विज्ञापन की सत्यता के बारे में स्वयं को संतुष्ट करने के लिए उपयुक्त जाँच और सत्यापन करें। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, इस पत्रिका के प्रकाशक और स्वामी, किसी भी विज्ञापन या विज्ञापनदाता की प्रामाणिकता या किसी भी विज्ञापनदाता के उत्पादों और/या सेवाओं के लिए समर्थन नहीं देंगे। किसी भी सूरत में इसमें विज्ञापन के लिए इस पत्रिक/संगठन के मालिक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक, निदेशक/कर्मचारी, किसी भी तरीके से जिम्मेदार/उत्तरदायी हो नहीं हो सकते।

एमपीईडीए बाहरी इंटरनेट साइटों की सामग्री के लिए ज़िम्मेदार नहीं है।

बंगाल मत्स्य उत्सव - 2019

बंगाल मत्स्य उत्सव 2019 की रंगीन शुरुआत 11 जनवरी 2019 को नालबन फूड पार्क, साल्ट लेक, कोलकाता में गणमान्य लोगों की मौजूदगी में हुई। उत्सव के उद्घाटन में उपस्थित लोगों में श्री सुब्रत मुखर्जी, पंचायत और ग्रामीण विकास मंत्री, श्री चंद्र नाथ सिन्हा, मात्स्यिकी मंत्री, श्री स्वपन देबनाथ, एआरडी एवं एमएसएमई मंत्री, श्री सधन पांडे, उपभोक्ता मामले और स्वयं सहायता समूह और स्वरोजगार मंत्री, श्री इंद्रनील सेन, पर्यटन राज्य मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार, श्री सब्यसाची दत्ता, बिधाननगर के महापालिकाध्यक्ष, श्री सुमंता चौधरी, प्रबंध निदेशक, एसएफएसी, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, श्री पी.के. मजूमदार, सलाहकार - कृषि और संबद्ध क्षेत्र मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार थे। इस आयोजन में पश्चिम बंगाल और अन्य राज्यों से कंपनी के प्रतिनिधि, व्यावसायिक घराने, मात्स्यिकी विश्वविद्यालय, मत्स्यन संस्थान, मछुआरे और अन्य पणधारी भाग लिए। जापान, वियतनाम, कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, बांग्लादेश और यूएई देशों द्वारा उत्सव में अपना प्रतिनिधित्व किया गया। मात्स्यिकी विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार ने इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स के साथ

बंगाल मत्स्य उत्सव 2019 का उद्घाटन समारोह

संयुक्त रूप से घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार संबंधों का पता लगाने, नई और निवेश के साथ उन्नत प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने और पश्चिम बंगाल के मात्स्यिकी और समुद्री क्षेत्रों में सभी प्रमुख हितधारकों के लिए ज्ञान प्रसार करने के उद्देश्य से 4 वें बंगाल मत्स्य उत्सव 2019 का आयोजन किया।

जिन लोगों ने वर्ष 2016 में मत्स्य कृषकों, मछुआरा सहकारी समितियों और सीएफसीएस के बीच से मात्स्यिकी क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन किया था, को उत्सव में समानीट किया गया और पुरससकार प्रदान किया गया। मेसर्स माग्नम एक्स्पोर्ट्स कोलकाता ने कोलकाता से सर्वाधिक निर्यात कारोबार के लिए पुरस्कार जीता। श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक और श्री जॉनसन डी 'क्रूज़, सहायक निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने उद्घाटन

डॉ. डी. रॉय, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए और श्री अतनु रॉय, नेटफिश डॉ. बी.के. महापात्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईएफ़ई के साथ

समारोह में भाग लिया। दूसरे दिन, व्यापार के अवसरों पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन के संकेंद्रित क्षेत्र थे (i) जलकृषि में प्रतिजैविकी के उपयोग की रोकथाम, (ii) आयात करने वाले देशों में विनियामक शासन में वृद्धि और (iii) बंगाल समुद्री खाद्य निर्यात और निर्यात प्रमाणन के लिए चुनौतियां और अवसर।

सम्मेलन की सह-अध्यक्षता सचिव, मात्स्यिकी विभाग, अतिरिक्त निदेशक, मात्स्यिकी विभाग, उप निदेशक, एमपीईडीए, उप निदेशक, ईआईए, कोलकाता, अध्यक्ष और सचिव, एसईएआई, कोलकाता द्वारा की गई। सत्र में लगभग 110 पणधारियों ने भाग लिया और अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की।

उत्सव में पश्चिम बंगाल सरकार के तहत के विभिन्न विभागों और अभिकरणों के प्रतिनिधि, चारा उत्पादन, चारा विक्रेता और सहकारी समितियों द्वारा भाग लिया गया। बंगाल मत्स्य उत्सव 2019 के चौथे संस्करण में एमपीईडीए की उपस्थिति एक प्रदर्शनी स्टाल और प्रायोजन के माध्यम से दर्ज की गई।

कल्चर प्रथाओं पर बेहतर प्रबंधन प्रणाली, जलकृषि में विविधता, सीफूड में मूल्यवर्धन प्रदर्शनी स्टालों का मुख्य विषय थे। संदेश वीडियो फिल्मों की स्क्रीनिंग और एमपीईडीए प्रकाशनों और चार्ट का प्रदर्शनके माध्यम से प्रस्तुत किए गए। आगंतुकों के लिए बिक्री और संदर्भ के लिए स्टाल पर मुद्रित सामग्री उपलब्ध थी। अन्य आगंतुकों और छात्रों के अलावा, इवेंट के तीन दिनों के दौरान लगभग 70 महत्वपूर्ण बातचीत हुई। एमपीईडीए की गतिविधियों को मत्स्य कृषकों, आकस्मिक आगंतुकों और अधिकारियों द्वारा सराहा गया।

खाने के स्टालों के लिए एक अलग खंड था, जहाँ खाने के लिए तैयार मत्स्य मद थे, जिसे 30 अलग-अलग विक्रेताओं द्वारा बेची जाती थीं जैसे कि जादवपुर से बावर्ची,

Freight Brokers Global Services Inc.

C-TPAT
Customs-Trade Partnership Against Terrorism
BUILDING PARTNERSHIPS • PROTECTING FREEDOM

Looking to Export to the U.S.?

Let our dedicated team with decades of experience assist you

Full Service, Inter-Modal & LTL Trucking

FCL/LCL Ocean Freight

Domestic and International Air Freight

Full Service FDA Security & Compliance Consulting

NEW FOR 2019

Seafood Import Monitoring Program

Now offering 2019 record keeping for NOAA Compliance

Have FBGS be your U.S. team to keep your imports covered for all monitoring requirements

LET'S GET STARTED!

Call: 718.471.1299

Email: Info@FreightBrokersGlobal.com

1200 Brunswick Ave, Far Rockaway, NY 11691

www.FreightBrokersGlobal.com

डॉ. देबाशीष रॉय, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए आगंतुकों के साथ बातचीत करते हुए

पौष परबान, ऑल फिश रेस्तरां दीघा खाद्य निगम, आईएफबी फ्रेश कैच, पोस्टो पटुली, सी/ ओ बंगाली, बेनफिश, नोम नोम आदि। इस खंड ने एक अच्छी भीड़ को आकर्षित किया।

इस आयोजन के मुख्य भागीदार थे, डबल्यूबीसीएडीसी, राज्य मात्स्यिकी विकास निगम, केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (आईसीएआर), पश्चिम बंगाल, राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन, बांकुरा जिला मच डिम्पोना उत्तपादक कल्याण समिति, पश्चिम बंगाल सरकार के पर्यटन विभाग, रश्मोनी मरीन मोहिला को-ऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी, सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यम और वस्त्र विभाग, मुदियाली मछुआरा सहकारी समिति लिमिटेड, मैग्नम एक्सपोर्ट्स, सीपीएफ़ (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, कस्तूरी एक्वालाईफ प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, पसुपति एक्वेटिक्स प्रा. लिमिटेड, ग्लोकस ग्रूप, टैरो फार्मूलेशन, दि ग्रोवेल ग्रुप, निप्पाई शालीमार फीड्स प्रा. लिमिटेड, नाचूरो वर्जिन, आलंकारिक मत्स्या जलकृषिविद कल्याण संघ, करवली ग्रूप ऑफ कंपनीस, अनमोल फीड्स प्राइवेट लिमिटेड, हावड़ा जिला आलंकारिक मछुआरा सहकारी सोसाइटी लिमिटेड और कुछ अन्य स्वयं सहायता समूह।

बंगाल मत्स्य उत्सव 2019 का समापन दिनांक 13 जनवरी 2019 को हुआ।

एसपीएस/टीबीटी मुद्दों पर भारत - ई यु संयुक्त कार्यदल की बैठक में अध्यक्ष, एमपीईडीए की भागीदारी

श्री के.एस. श्रीनिवास, अध्यक्ष, एमपीईडीए ने दिनांक 18 जनवरी 2019 को एसपीएस/टीबीटी मुद्दों पर 12 वें संयुक्त कार्य दल (जेडबल्यूजी) में भाग लेने के लिए ब्रसेल्स का दौरा किया। उनके साथ श्री संतोष कुमार सारंगी, संयुक्त सचिव, वाणिज्य विभाग (वाणिज्य विभाग), श्री एन रमेश, निदेशक, वाणिज्य विभाग और श्री आर.एम. मंडिक, उप निदेशक, ईआईसी उपस्थित थे।

बैठक श्री सारंगी और श्री पीटर बेर्ज़, इकाई प्रमुख, महानिदेशक (व्यापार), यूरोपियन यूनियन की सह-अध्यक्षता में आयोजित की गई। श्री आर.पी. सिंह, सलाहकार और डॉ. स्मिता सिरोही, सलाहकार, ब्रसेल्स में भारत के दूतावास भी बैठक में उपस्थित थे।

जेडबल्यूजी ने भारत और यूरोपीय संघ के बीच समुद्री खाद्य व्यापार से जुड़े तीन मुद्दों को उठाया। बैठक में लिया जाने वाला पहला विषय था, सभी जानवरों की प्रजातियों और वर्गों के लिए चारा योज्य के रूप में एथोक्सीक्विन की उपयोग के निलंबन का मुद्दा। ईयू ने दिनांक 13 जून 2017 को एसपीएस अधिसूचना (जी/एसपीएस/एन/ईयू/190/अतिरिक्त.1) जारी की।

चर्चा के लिए एक और बिंदु उठाया गया, प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों को उनके उत्पादों में पाए जाने के कारण यूरोपीय संघ द्वारा 14 भारतीय प्रसंस्करण प्रतिष्ठानों का परिसीमन। यूरोपीय संघ को यह जानकारी दी गई कि इन कंपनियों के प्रेषण के बाद यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त सावधानी बरती जाती है कि इस तरह के मामलों को दोहराया न जाए। इन कंपनियों को डीलिस्ट करने के फैसले पर पुनर्विचार करने का अनुरोध किया गया।

यूरोपीय संघ ने भारत से आयात किए जाने वाले जलकृषि उत्पादों के नमूने जिसका प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों की उपस्थिति को परखने के लिए सीमा शुल्क पर इसका जाँच किया जाता है, के आकार में 10 से 50 प्रतिशत तक की वृद्धि की। यह दिनांक 4 अक्टूबर, 2016 को जारी यूरोपीय संघ आयोग के निर्णय संख्या 2016/1774 के आधार पर किया गया था। भारत और यूरोपीय संघ के बीच व्यापार की स्थिति में सुधार के लिए 10 प्रतिशत के मूल नमूने का आकार वापस कर देने हेतु यूरोपीय संघ से अनुरोध किया गया।

उनकी ओर से, यूरोपीय संघ ने स्थिति का विश्लेषण और समीक्षा करने के लिए जल्द ही तकनीकी विशेषज्ञों के एक प्रतिनिधिमंडल को भारत भेजने के लिए सहमत हुआ। भारतीय टीम को बताया गया कि भारतीय कंपनियों के डीलिस्टिंग और नमूना आकार को बदलने की फैसला उस दौरे के बाद लिया जाएगा।

नेटफिश, एमपीईडीए द्वारा क्षमता निर्माण कार्यक्रम

निकिता गोपाल, आरती अशोक*, आर. रघु प्रकाश, यू. पार्वती, के.के. प्रजित, वी. रेणुका, रेशमी डेब्बर्मा और जोईस वी. तोमस

वर्ष 2015-16 के दौरान नेटफिश-एमपीईडीए और आईसीएआर- सीआईएफ़टी के बीच एक परामर्श समझौते के हिस्से के रूप में मत्स्य गुणवत्ता प्रबंधन और चिरस्थाई मत्स्यन के लिए नेटवर्क (नेटफिश), समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) के तहत एक पंजीकृत सोसाईटी, द्वारा कार्यक्रमों का मूल्यांकन आयोजित किया गया।

नेटफिश के बुनियादी स्तर की क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का संकेंद्रीकरण मत्स्य की गुणवत्ता का प्रबंधन, मत्स्य संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ चिरस्थाई मत्स्यन है और इसके पणधारी मूल रूप से मछुआरे और मछुआरिन; मत्स्य लैंडिंग केंद्रों और बंदरगाहों के श्रमिक; प्रसंस्करण श्रमिक और तकनीशियन; आदि हैं। मूल्य श्रृंखला में सुधार के लिए नियमित और विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि भारत से उत्पादित और निर्यात किए जाने वाले समुद्री खाद्य उत्पाद आयातित देशों द्वारा वांछित गुणवत्ता मानकों को पूरा कर सकें।

चार राज्यों, केरल, महाराष्ट्र, गुजरात और आंध्र प्रदेश के बंदरगाहों और लैंडिंग केंद्रों पर आयोजित कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया गया। 18 बंदरगाहों और लैंडिंग केंद्रों पर गतिविधियों का सर्वेक्षण किया गया और इस उद्देश्य के लिए 217 व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया गया और अधिकांश स्थानों पर फोकस ग्रुप डिस्कशन (एफ़जीडी) के साथ सूचना या डेटा अंतराल को बढ़ाया गया।

वर्ष 2008-09 से 2014-15 की अवधि में, नेटफिश द्वारा संचालित कार्यक्रमों की संख्या सालाना औसतन लगभग 2721 कार्यक्रम था (सभी कार्यक्रम सहित)। यह प्रमुख केंद्र प्रति 272 कार्यक्रम है।

नेटफिश की एक वार्षिक कार्य योजना है जिसमें प्रति केंद्र आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या की लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक राज्य (केंद्र) में एक समन्वयक होता है। चूंकि कार्यक्रमों का संकेंद्रीकरण गुणवत्ता सुधार पर है; कार्यक्रम आम तौर पर बंदरगाहों और लैंडिंग केंद्रों, ऑन-बोर्ड मत्स्यन यानों, पूर्व-प्रसंस्करण और प्रसंस्करण केंद्रों साथ ही मत्स्य को सुखाने में लगे हुए केंद्र पर आधारित होते हैं।

कार्यक्रम में लैंडिंग केंद्र - गुणवत्ता; लैंडिंग केंद्र - संरक्षण; ऑन बोर्ड गुणवत्ता; पूर्व प्रसंस्करण - गुणवत्ता और सुरक्षा पहलू; प्रसंस्करण - गुणवत्ता और सुरक्षा पहलू और सूखा-मत्स्य= गुणवत्ता और सुरक्षा पहलू शामिल है। यह देखा गया है कि उपर्युक्त सभी कार्यक्रमों के 69.98 प्रतिशत लैंडिंग केन्द्रों और बन्दरगाहों में आयोजित किए गए।

यह समुद्री खाद्य मूल्य श्रृंखला में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है और प्रमुख ध्यान देने की आवश्यकता है। यह साबित हो चुका है कि मत्स्य की गुणवत्ता के मुद्दे लैंडिंग केंद्रों और बंदरगाहों के खराब अवसंरचनात्मक सुविधाओं के कारण उत्पन्न होते हैं, जो आगे चलकर गंदी हैंडलिंग प्रथाओं से कई गुना अधिक हो जाएंगे।नुक्कड़ नाटक,चिकित्सा शिविर, सफाई अभियान, रैलियाँ, स्कूलों में कार्यक्रम और डोर-से -डोर अभियान आदि कुछ विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

गुजरात से केरल तक लाभार्थियों की औसत आयु 33.26 से 43.28 के बीच है। कुल मिलाकर औसत आयु 33 वर्ष थी। यह स्पष्ट है कि विभिन्न केंद्रों पर नेटफिश प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लाभार्थी सक्रिय आयु वर्ग के थे। यह उत्तरदायी संकायों के साथ एक आयु वर्ग भी है और इसलिए किसी भी शिक्षण या सीखने की प्रक्रिया को परिणाम दिखाएंगे। लगभग 86 प्रतिशत प्रत्यर्थी साक्षर थी। साक्षरता का अधिकतम प्रतिशत केरल में था इसके बाद हैं गुजरात, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश।

आईसीएआर - केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचिन *आईसीएआर - राष्ट्रीय कृषि अर्थशास्त्र और नीति अनुसंधान संस्थान (एनआईएपी), नई दिल्ली / **नेटफिश, एमपीईडीए, कोचिन

मूल्यांकन अध्ययन गुणवत्ता और संरक्षण पर बंदरगाह आधारित कार्यक्रमों पर केंद्रित था। मूल्यांकन एक सर्वेक्षण उपकरण का उपयोग करके किया गया था, जिसमें तीन व्यापक खंड शामिल थे - प्रशिक्षण के शिक्षणशास्त्र से निपटना, जागरूकता के स्तर से मापा गया प्रभाव और सूचना का आवेदन लाभार्थियों को दिया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में सामान्य संतुष्टि

बंदरगाह और लैंडिंग केंद्र मत्स्य बिक्री का पहला बिंदु हैं और यही मत्स्य जो घरेलू बाजारों में ले जाती है और साथ ही देश के निर्यात बाज़ारों के आहार प्रबंधन हेतु समुद्री खाद्य फैक्टरियों में प्रसंस्करण के लिए जाता है। जैसे कि बंदरगाहों और लैंडिंग केंद्रों में सफाई और स्वच्छता बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि मत्स्य जैसे अत्यधिक विनाशशील मद की गुणवत्ता बनी रहे। इन केन्द्रों में ऑनबोर्ड में मत्स्यन यान के कर्मीदलों और हारबरों और लैंडिंग केन्द्रों के श्रमिकों के लिए स्वच्छता और सफाई का प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है। गुणवत्ता पर बंदरगाह आधारित कार्यक्रमों की समग्र रेटिंग (समूहीकृत डेटा) 46.58 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए 'बहुत अच्छा' था और 34.60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए 'अच्छा' था। कुल नमूने में से, 81.18 फीसदी उत्तरदाताओं की राय थी कि बंदरगाह और लैंडिंग केंद्रों में गुणवत्ता के पहलुओं पर प्रशिक्षण कार्यक्रम अच्छा था।

जहाँ तक प्रशिक्षण के शिक्षणशास्त्र का संबंध है, 95 प्रतिशत से अधिक लाभार्थियों ने सहमति व्यक्त की कि उनके संचालन क्षेत्र के लिए विषय और सामग्री प्रासंगिक थे।

वे प्रशिक्षण के समय और उपयोग किए गए तरीकों और प्रदान की गई सुविधाओं से भी संतुष्ट थे। प्रशिक्षण सामग्री उपयोगी थी यह करीब 97.22 फीसदी लोगों ने महसूस किया। प्रभावशीलता पर 97 प्रतिशत से अधिक अंक समन्वयकों ने प्राप्त किया और इसे रिकार्ड किया गया कि उन्हें चर्चाओं और पूरी प्रशिक्षण प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

विनाशकारी गियर के हानिकारक प्रभावों, पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिए गियर में किए जाने वाले सुधारों, किशोर मत्स्यन और संसाधन आधार पर अन्य प्रभाव जो देश की मत्स्य पालन को बनाए रखते हैं, पर मछुआरों और मत्स्य श्रमिकों के बीच जागरूकता पैदा करने के उपाय के रूप में संरक्षण पर कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।

समूहीकृत आंकड़ा यह दिखाते हैं कि 48.32 फीसदी लोगों ने महसूस किया कि प्रशिक्षण 'बहुत अच्छा' था और 35.51 प्रतिशत को लगा कि यह 'अच्छा' था। प्रशिक्षण पर लगभग 15 फीसदी लोगों की राय नहीं थी और उसी के प्रति वे उदासीन थे। जहाँ तक शिक्षाशास्त्र का सवाल था, गुणवत्ता पर कार्यक्रम के समान परिणाम को देखते हुए 95 प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम की संतुष्टि की मापदंडों के लिए अच्छे अंक दिए गए।

मत्स्य की गुणवत्ता प्रबंधन से संबंधित जागरूकता

चयनित विभिन्न मापदंडों के लिए बन्दरगाह/लैंडिंग केंद्र के कर्मचारियों का जागरूकता स्तर 77-99 प्रतिशत से लेकर थे। इन प्रथाओं को अपनाना ही प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रभावी बनाता है। गुणवत्ता पर कार्यक्रमों का तनाव व्यक्तिगत स्वच्छता और सफाई के साथ-साथ कार्य के परिसर पर भी रहा है। इसके लिए कई विशिष्ट गतिविधियों के अभ्यास की आवश्यकता होती है जैसे कि साफ जूतों का उपयोग, ग्लोव्स और मुह पीसस; तंबाकू अन्य नशीले पदार्थ चूसना और चबाना और धूम्रपान न करना; स्वच्छ और साफ स्थिति में नीलामी हॉल और बंदरगाह बनाए रखना और स्वच्छता की स्थिति आदि।

विनाशकारी गियर के हानिकारक प्रभावों, पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिए गियर में किए जाने वाले सुधारों, किशोर मत्स्यन और संसाधन आधार पर अन्य प्रभाव जो देश की मत्स्य पालन को बनाए रखते हैं, पर मछुआरों और मत्स्य श्रमिकों के बीच जागरूकता पैदा करने के उपाय के रूप में संरक्षण पर कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।

'सीखी गई' या 'अधिगृहीत' जानकारी का अनुप्रयोग प्रशिक्षण का मूल है। यह प्रशिक्षण की प्रभावी स्थिति का एक वास्तविक तस्वीर देता है। इस अध्ययन के लिए प्रतिवादी प्रतिक्रियाओं के अनुसार, मत्स्य और बर्फ की स्वच्छ हैंडलिंग, प्लास्टिक शोवेल्स का उपयोग, व्यक्तिगत स्वच्छता का रखरखाव, बंदरगाह में मत्स्य की कटाई, सफाई और प्रसंस्करण का वर्जन आदि जिन बंदरगाहों का मूल्यांकन

किया गया है, ने बुनियादी प्रथाओं को अपनाया है। हालांकि, सर्वेक्षण टीम के अवलोकन में पाया गया है कि उत्तरदाताओं द्वारा कथित अपनाने का दर उतना उच्च नहीं हैं। यह लाभार्थियों की जागरूकता और जमीनी हकीकत के बीच एक अंतर को संकेत करता है। यह देखा गया कि बंदरगाह में बुनियादी ढांचागत सुविधाओं जैसेकि गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए मानक प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन में बाधा पर्याप्त पीने योग्य पानी और बर्फ, सड़क और परिवहन सुविधाएँ, नीलामी हॉल और स्थापित प्लेटफार्मों की उपलब्धता, प्लास्टिक के बक्से, बेलचा जैसे उपयुक्त उपकरण आदि का अभाव है जो

गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए मानक प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन में बाधा डालने वाला है। बंदरगाह में पर्याप्त शौचालयों का अभाव, और अगर मौजूद है तो असुविधाजनक स्थानों में प्रवेश कठिन होता है, इससे कार्यकर्ताओं को तत्काल परिवेश को खराब करने के लिए मजबूर करता है। केरल, आंध्र प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र में सर्वेक्षण किए गए लगभग सभी 18 बंदरगाह या लैंडिंग केंद्रों में ये आम मुद्दे हैं।

कुल मिलाकर, मत्स्य के स्वच्छ हैंडलिंग और बंदरगाहों में स्वच्छता बनाए रखने की आवश्यकता हेतु जागरूकता के स्तर पर नेटफिश की प्रशिक्षण गतिविधियों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। हालांकि, अधिकांश बंदरगाह और लैंडिंग केंद्रों में अवसंरचनात्मक और परिचालन संबंधी समस्याएं पाई गईं, जो कुछ प्रथाओं को अपनाना कठिन बनाते हैं। बंदरगाह के प्रबंधन में शामिल पणधारी संगठनों की बहुलता और उनकी गतिविधियों में अभिसरण की कमी इन मुद्दों को बहुत गंभीर बनाता है।

बंदरगाह और लैंडिंग केंद्र में संरक्षण पर कार्यक्रम के तहत आने वाले विषयों पर जागरूकता का स्तर चयनित विभिन्न मापदंडों के लिए 60-99 प्रतिशत से लेकर था।

कछुए को बाहर करने वाले उपकरणों (टीईडीएस) के उपयोग के बारे में जागरूकता का स्तर न्यूनतम था, जबकि ट्रैवेल प्रतिबंध पर 99 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाता इसके बारे में जागरूक थे। मूल्यांकन अध्ययन के दौरान, यह देखा गया कि मछुआरे ट्रॉल प्रतिबंध का पूर्ण अनुपालन करते हैं, क्योंकि यह कानूनी रूप से उन पर बाध्यकारी है। वे पर्यावरणानुकूल मत्स्यन तरीके अपनाने के प्रति और समुद्री प्रदूषण को नियंत्रित करना और समुद्री क्षेत्रों की रक्षा करने पर भी सकारात्मक थे। नेटफिश स्क्वेयर मेष कोड एंड के प्रचार और आपूर्ति कर रहा है और सीआईएफ़टी-टीईडी का उपयोग करने की आवश्यकता पर भी बल देता है। लेकिन अपनाने का स्तर क्रमशः 33 प्रतिशत और 8 प्रतिशत तक कम था।

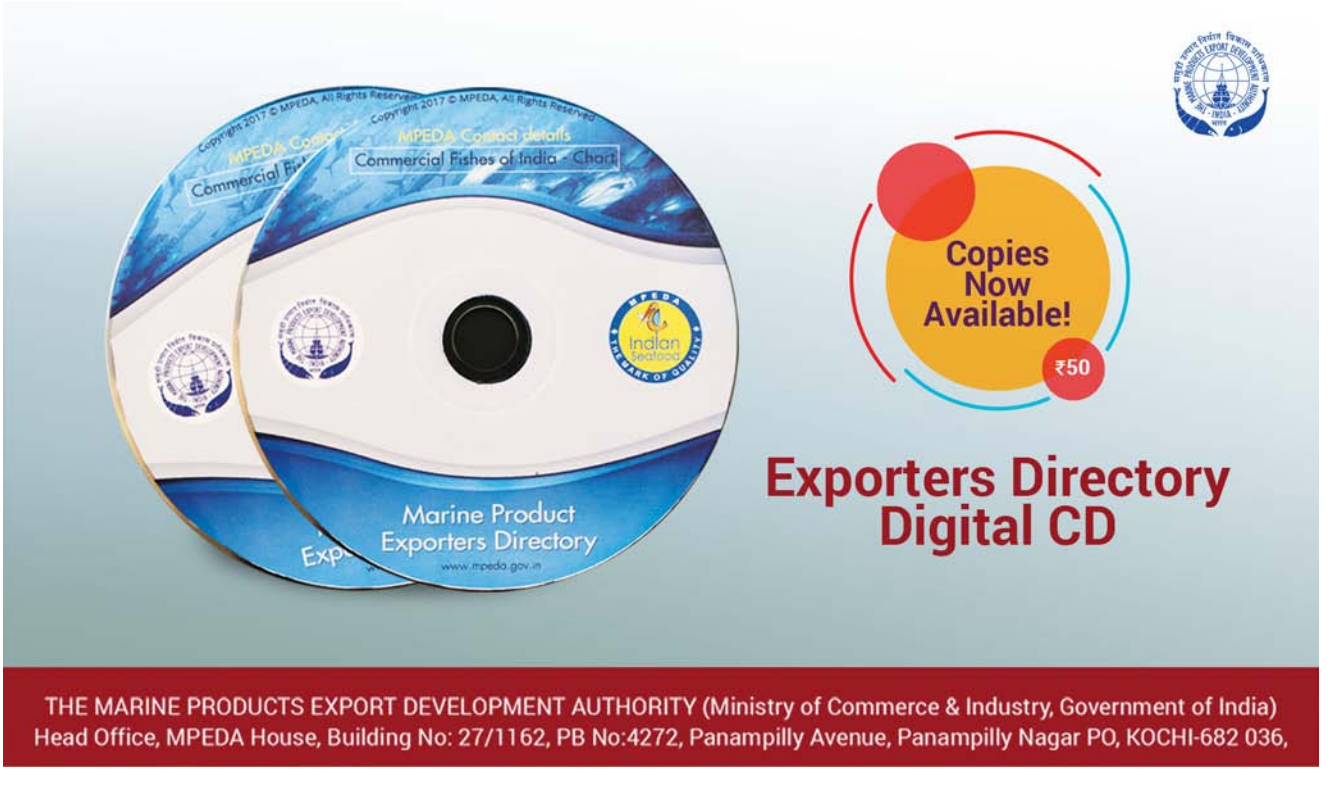

दिसंबर 2018 के दौरान भारत के चयनित बंदरगाहों में समुद्री मत्स्य की लैंडिंग की मुख्य विशेषताएं

अफ़सल वी. वी., एन.जे. नीतु और जोईस वी. तोमस, नेटफिश-एमपीईडीए
नेटफिश-एमपीईडीए

एमपीईडीए के पकड़ प्रमाणीकरण प्रणाली की सुविधा के लिए भारत के प्रमुख बंदरगाह से प्रमुख मत्स्य क़िस्मों की लैंडिंग और मत्स्यन यानों द्वारा लैंड किए गए पकड़ के विवरण नेटफिश द्वारा दैनिक आधार पर दर्ज किया जाता है। इस रिपोर्ट में दिसंबर 2018 के दौरान प्राप्त बन्दरगाह आंकड़े के विश्लेषण परिणामों का वर्णन किया गया है।

आँकड़ा संग्रह और विश्लेषण

मत्स्य पकड़ और नाव आगमन के आंकड़े प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्त्रोतों से, 9 तटीय राज्यों (तालिका 1 देखें) के साथ भारत के चयनित बंदरगाहों पर तैनात हार्बर डेटा कलेक्टरों द्वारादैनिक आधार पर प्राप्त किए जाते है। बंदरगाह पर एक दिन में उतारे गए प्रमुख मत्स्य प्रजातियों की अनुमानित मात्रा आँख आकलन द्वारा प्राप्त किया गया। बंदरगाह पर मत्स्यन यानों का नाम, पंजीकरण संख्या और प्रकार भी दर्ज किए गए। प्रजाति-वार, क्षेत्र-वार, राज्य-वार और हार्बर-वार अनुमानों पर पहुंचने के लिए ऑनलाइन अनुप्रयोगों और एमएस ऑफिस (एक्सेल) टूल का उपयोग करके आंकड़े का विश्लेषण किया गया। दिसंबर 2019 के दौरान, 9 समुद्री तटीय राज्यों से संबंधित 44 बंदरगाहों का आँकड़ा डेटा प्राप्त किए गए जो इस रिपोर्ट केलिए इसका विश्लेषण किया गया।

तालिका 1. आँकड़ा संग्रह के लिए चयनित लैंडिंग स्थानों की सूची

क्रम सं.	राज्य	मत्स्यन बन्दरगाह
1	पश्चिम बंगाल	देशप्राण
2		नमखाना
3		रैढिगी
4		डिघा (शंकरपुर)
5	ओड़ीशा	पारदीप
6	ओड़ीशा	बलरामगडी
7		बहाबलपुर
8		ढामरा
9	आंध्र प्रदेश	विशाखपट्टिनम
10		निज़ामपट्टिनम
11		मछलीपट्टिणम
12		काक्किनाड़ा
13	तमिल नाडु	नागपट्टिनम
14		कारैक्कल
15		चेन्नई
16		पषईयार
17		कडलूर
18		पॉण्डिचेरी
19		चिन्नमुट्टम
20		मंडपम
21		तूत्तिकोरिन
22		कोलच्चल
23	केरल	तोप्पुंपड़ी
24		विषिंजम
25		तोट्टप्पल्ली
26		कायमकुलम
27		बेपोर
28		शक्तिकुलंगरा
29		मुनंबम
30		पुतियाप्पा
31	कर्नाटक	तद्री
32		कारवार
33		मंगलोर
34		होन्नावर
35		मालपे
36		गंगोली

37	गोआ	कटबोना
38		मालिम
39	महाराष्ट्र	रत्नागिरी (मिरकरवाड़ा)
40		सस्सों डॉक
41	महाराष्ट्र	हारने
42	गुजरात	वेरावल
43		मंगरोल
44		पोरबंदर

मत्स्य लैंडिंग पर अनुमान

दिसंबर 2018 के दौरान 44 लैंडिंग स्थानों से कुल 80378.18 टन समुद्री मत्स्य की लैंडिंग दर्ज की गई, जिसमें 33592.50 टन (42%) पेलाजिक फिनफ़िश संसाधन, 25111.14 टन (31%) डेमर्सल फिनफ़िश और 21674.54 टन (27%) शेलफिश शामिल थे (चित्र 1)। शेलफिश लैंडिंग 13274.38 टन मोलस्क और 8400.16 टन क्रस्टेशियन से बना था।

कुल पकड़ में 103 प्रकार के समुद्री मत्स्य मद शामिल थे, जिनमें से शीर्ष पांच योगदानकर्ता थे रिबन फिश, इंडियन मैकेरल, कट्टलफिश, रेडटॉथेड फाइलफिश और स्क्विड (चित्र 2)। इन 5 मत्स्य मदों ने मिलकर कुल पकड़ का 43% बनाया। पकड़ के लिए अन्य प्रमुख योगदानकर्ता थे हॉर्स मैकेरल, बुल्स आई और जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम, प्रत्येक ने 3500 टन से ज़्यादा दर्ज की। महीने के दौरान 0.25 टन की मात्रा के साथ सबसे न्यूनतम लैंडिंग दर्ज करने वाले किस्म थे वर्मीक्युलेटेड स्पाइन-फुट।

तालिका 2 में दिसंबर 2018 के दौरान दर्ज किए गए विभिन्न मत्स्य मदों की मात्रा शामिल है।

पेलाजिक फिनफिश संसाधनों में, रिबन फिश और इंडियन मैकेरल प्रमुख योगदानकर्ता रहे और डेमर्सल फ़िनिशेस के मामले में अधिक योगदानकर्ता थे रेड-टूथेड़ फायलफिश, बुल्स आई और जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम। शेलफिश संसाधनों में प्रमुख मद पीनिड श्रिम्प, कट्टलफिश और स्क्विड थे। पीनिड श्रिम्पों में, करिक्काड़ी श्रिम्प सर्वोच्च पकड़ दर्ज की।

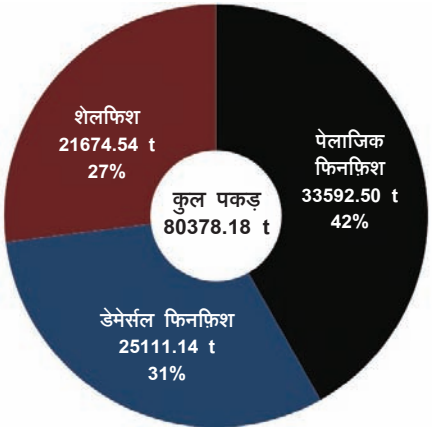

चित्र 1. दिसंबर 2018 के दौरान किए गए श्रेणी-वार मत्स्य लैंडिंग

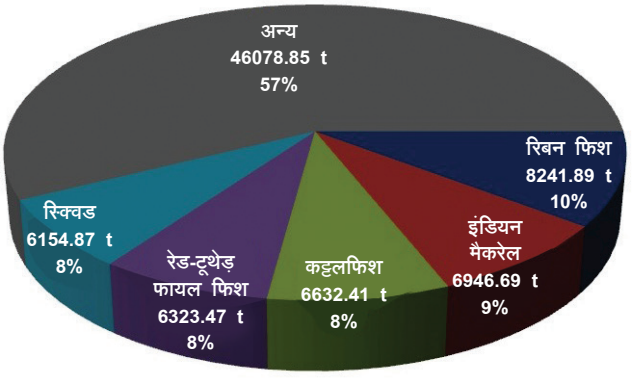

चित्र 2. दिसंबर 2018 के दौरान लैंड किए गए प्रमुख मत्स्य मद

तालिका 2. दिसंबर 2018 के दौरान विभिन्न मत्स्य मदों की श्रेणी-वार लैंडिंग

मत्स्य मद	मात्रा टनों में	कुल पकड़ का %
पेलाजिक फिनफ़िश		
रिबन फिश	8241.89	10.25
इंडियन मैकरेल	6946.69	8.64
हॉर्स मैकरेल	3877.15	4.82
इंडियन ऑइल सारडीन	2701.77	3.36
ट्यूना	2285.95	2.84
सीर फिश	1618.77	2.01
ट्रेवली	1512.43	1.88
एंचोवी	1406.68	1.75
डोलफ़िन फिश	919.41	1.14
बारक्कुडा	758.87	0.94
स्काड़	700.40	0.87
बॉम्बे डक	588.64	0.73
लेस्सर सारडीन	436.21	0.54
हेरिंग्स	434.92	0.54
क्वीन फिश	296.49	0.37

लेथर जैकेट	231.63	0.29
सेल फिश	166.02	0.21
ओर्यंटल बोनिटो	158.70	0.20
मुल्लेट	87.33	0.11
हिल्सा	57.99	0.07
मार्लिंस	55.42	0.07
इंडियन इलिषा	40.51	0.05
इंडियन साल्मन	30.40	0.04
कोबिया	22.05	0.03
सी बास	7.89	0.01
सिल्वर सिलागो	6.20	0.01
इंडियन थ्रेड फिश	0.90	0.00
नीडिल फिश	0.71	0.00
रेनबों रन्नर	0.50	0.00
कुल	**33592.50**	**41.79**
डेमेर्सल फिनफ़िश		
रेड-टूथेड़ फायलफिश	6323.47	7.87
बुल्स आई	3632.82	4.52
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	3519.14	4.38
क्रोकेर्स	3222.80	4.01
रीफ़ कोड्स	1890.95	2.35
कैट फिश	1868.88	2.33
सोल फिश	1212.03	1.51
लिजार्ड फिश	1078.23	1.34
पोंफ्रेट	877.97	1.09
मून फिश	309.97	0.39
ईल	279.38	0.35
स्नाप्पर	231.40	0.29
पोणी फिश	224.76	0.28
गोट फिश	169.75	0.21
रे	124.31	0.15
पेर्च	36.30	0.05
घोल	34.52	0.04
इंडियन हालिबट	22.70	0.03
विप फिन सिल्वर बिड्डी	20.25	0.03
एम्परर ब्रीम	18.52	0.02
पैरट फिश	8.25	0.01
स्पाइन फूट	4.75	0.01
कुल	**25111.14**	**31.24**
शेलफिश		
क्रस्टेशियन्स		
पीनिड श्रिम्प	7457.65	9.28
गैर पीनिड श्रिम्प	169.31	0.21
समुद्री केकड़ा	751.54	0.94
कीचड़ केकड़ा	3.90	0.00
लॉब्स्टर	17.76	0.02
कुल क्रस्टेशियन्स	**8400.16**	**10.45**
मोलस्क		
स्क्विड़	6154.87	7.66
कट्टलफिश	6632.41	8.25
ऑक्टोपस	487.11	0.61
कुल मोलस्क	**13274.38**	**16.51**
कुल शेलफिश	**21674.54**	**26.97**
कुल योग	**80378.18**	**100.00**

क्षेत्र-वार लैंडिंग

दिसंबर 2018 में, उत्तरी पश्चिम तट मत्स्या लैंडिंग की सर्वोच्च मात्रा दर्ज की गई जहां महाराष्ट्र और गुजरात के चयनित बंदरगाह से कुल 36500.87 टन (कुल पकड़ का 46%) मत्स्य पकड़ दर्ज की गई। केरल, कर्नाटक और गोवा सहित दक्षिण पश्चिम तट ने कुल कैच में 29238.23 टन (36%) का योगदान देकर दूसरे स्थान पर रहे। दक्षिण पूर्व तट में, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में चयनित बंदरगाहों में से कुल भूमि 5098.50 टन (6%) दर्ज की गई, जबकि उत्तर पूर्वी तट के साथ पश्चिम बंगाल और ओडिशा के 8 बंदरगाह में से कुलमिलाकर 9540.57 टन (12%) मत्स्य पकड़ दर्ज की गई (चित्र 3)।

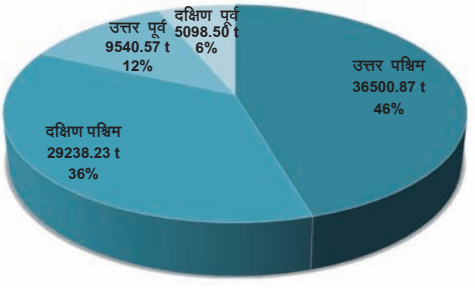

चित्र 3. दिसंबर 2018 के दौरान दर्ज की गई क्षेत्र-वार लैंडिंग

राज्य-वार लैंडिंग

महीने के दौरान गुजरात से कुल मिलाकर 29886.16 टन की अधिकतम लैंडिंग दर्ज की गई जो कि कुल पकड़ (37) के 37% से अधिक थी (चित्र 4)। इसके बाद 20192.44 टन (25%) के साथ कर्नाटक रहा और फिर पश्चिम बंगाल ने 6743.17 टन (8%) के योगदान दिया। आंध्र प्रदेश ने इस अवधि के दौरान कम से कम लैंडिंग दर्ज की, जिसने केवल 1690.06 टन (2%) समुद्री मत्स्य पकड़ दर्ज की गई। पश्चिम तटीय राज्यों ने कुल मिलाकर लगभग 82% पकड़ दर्ज की।

दिसंबर के दौरान प्रत्येक राज्य में लैंडिंग में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रमुख पांच मत्स्य मदों का विवरण तालिका 3 में दिए गए हैं।

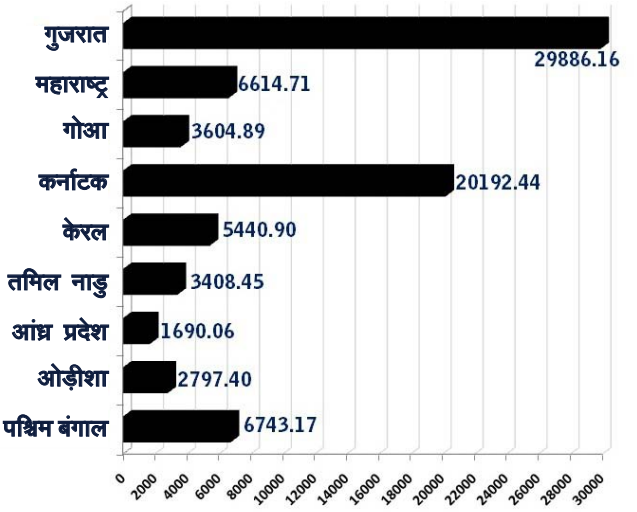

चित्र 4. दिसंबर 2018 के दौरान के राज्य-वार मत्स्य लैंडिंग (टन में)

तालिका 3. दिसंबर 2018 के दौरान विभिन्न राज्यों में लैंड किए गए प्रमुख मद

मद	मात्रा टनों में	% राज्य का कुल पकड़
केरल		
रिबन फिश	928.42	17.06
इंडियन ऑइल सरडीन	743.12	13.66
स्क्विड	507.86	9.33
इंडियन मैकरेल	474.87	8.73
कट्टलफिश	417.41	7.67
कर्नाटक		
रेड टूथेड़ फायलफिश	6322.37	31.31
इंडियन मैकरेल	3669.11	18.17
ट्रेवल्ली	1194.46	5.92
स्क्विड	1081.55	5.36
इंडिया ऑइल सारडीन	1046.85	5.18
गोआ		
इंडियन मैकरेल	904.70	25.10
हॉर्स मैकरेल	774.52	21.49
रिबन फिश	323.00	8.96
बुल्स आई रक्त वर्ण	299.30	8.30
मून फिश	209.90	5.82
महाराष्ट्र		
हॉर्स मैकरेल	1862.42	28.16
स्क्विड	686.74	10.38
कट्टलफिश	686.01	10.37
रिबन फिश	585.22	8.85
इंडियन मैकरेल	412.57	6.24

गुजरात		
रिबन फिश	4812.00	16.10
कट्टलफिश	4412.00	14.76
स्क्विड	3150.50	10.54
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	2762.00	9.24
बुल्स आई- डस्की फिंड	1984.70	6.64
तमिल नाडु		
कट्टलफिश	646.60	18.97
स्क्विड	226.99	6.66
ट्यूना	190.87	5.60
इंडियन स्काड़	174.37	5.12
समुद्री केकड़ा	155.27	4.56
आंध्र प्रदेश		
ट्यूना	248.51	14.70
समुद्री श्रिम्प (करिक्काड़ी)	143.07	8.47
ब्राउन श्रिम्प	139.14	8.23
रिबन फिश	111.94	6.62
स्क्विड	108.71	6.43
ओड़ीशा		
क्रोकर	688.65	24.62
समुद्री श्रिम्प (करिक्काड़ी)	258.38	9.24
रिबन फिश	244.95	8.76
गोल्डेन एंचोवी	144.28	5.16
कैट फिश	144.03	5.15
पश्चिम बंगाल		
इंडियन ऑइल सारडीन	563.96	8.36
क्रोकर	555.48	8.24
रिबन फिश	483.85	7.18
बॉम्बे डक	400.83	5.94
इंडियन मैकरेल	383.26	5.68

बन्दरगाह-वार विवरण

चित्र 5 और 6 महीने के दौरान क्रमशः पश्चिमी तट और पूर्वी तट के चयनित बंदरगाहों पर दर्ज किए गए मत्स्य लैंडिंग का प्रतिनिधित्व करता है। 44 बंदरगाहों में से, गुजरात के वेरावल बंदरगाह ने 12738.00 टन (16%) की सबसे अधिकतम लैंडिंग दर्ज की और इसके बाद मंगरोल बंदरगाह ने 9429 टन (12%) का योगदान दिया। पूर्वी तट के शकरपुर बंदरगाह ने 2746.53 टन (3%) की मात्रा का सबसे अधिकतम लैंडिंग दर्ज की, और सातवें स्थान पर रहे। महीने के दौरान, पश्चिमी तट के 12 बंदरगाह और पूर्वी तट के 5 बंदरगाह सहित 44 बंदरगाहों में से 17 ने 1000 टन से अधिक का मत्स्य पकड़ दर्ज किया। तमिलनाडु के चिन्नमुट्टम बंदरगाह से समुद्री मत्स्य पकड़ की सबसे कम मात्रा दर्ज की गई (34.10 टन)।

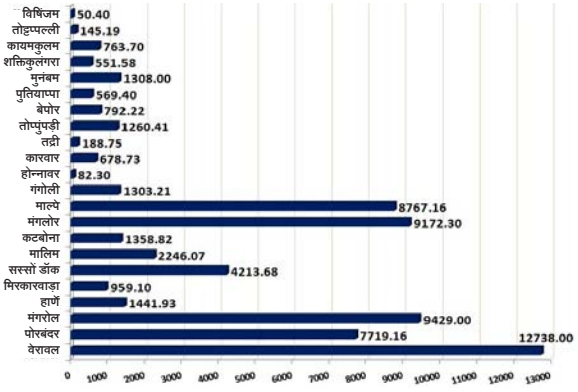

चित्र 5. दिसंबर 2018 के दौरान पश्चिमी तट के बन्दरगाहों पर दर्ज की गई लैंडिंग (टनों में)

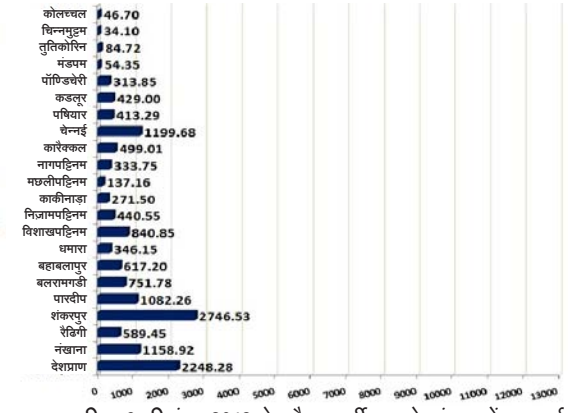

चित्र 6. दिसंबर 2018 के दौरान पूर्वी तट के बंदरगाहों पर दर्ज की गई लैंडिंग (टनों में)

नाव आगमन पर अनुमान

दिसंबर 2018 के दौरान कुल 30849 नाव आगमन दर्ज की गई, जिनमें से सबसे अधिक नौकाओं की संख्या वेरावल बंदरगाह (4098) सेदर्ज की गई। 3339 नाव के आगमन के साथ मांगरोल बंदरगाह अगले स्थान पर रहा। लगभग 78% मत्स्यन यान जिन्होंने अपने पकड़ को बंदरगाहों में लैंड किया गया वह ट्राव्लेर्स श्रेणी का था और शेष लैंडिंग पर्स सीनर्स, गिल नेटर्स, लॉन्ग लाइनर्स और ट्रेडिशनल क्राफ्ट्स के थे।

तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 4 में पिछले महीनों के साथ दिसंबर 2018 के आंकड़ों की तुलना प्रस्तुत किया गया है।

नवंबर की तुलना में दिसंबर के दौरान कुल मत्स्य पकड़ में लगभग 6000 टन की कमी आई। हालांकि पेलाजिक फिनफिश सर्वोच्चव योगदानकर्ता के रूप में जारी रहा, हिस्सा प्रतिशत में लगभग 6% की कमी दिखाई, जो डेमर्सल फ़िनफिश और शेलफिश के प्रतिशत शेयर में 3% की वृद्धि के रूप में परिलक्षित हो गया।

इस अवधि के दौरान विभिन्न मत्स्य मदों के बीच रिबन फिश का सर्वोच्च योगदान रहा। राज्य के गुजरात और वेरावल बन्दरगाह पिछले महीने की तरह मत्स्य लैंडिंग की मात्रा में शीर्ष स्थान पर रहे। नवंबर की तुलना में दिसंबर में दर्ज की गई नाव की कुल संख्या में वृद्धि हुई।

तालिका 4. डेटा का तुलनात्मक विश्लेषण

	अक्तूबर 2018	नवंबर 2018	दिसंबर 2018
कुल पकड़	83264.15 t	86132.22 t	80378.18 t
पेलाजिक फिनफ़िश लैंडिंग	38139.34 t (46%)	41079.77 t (48%)	33592.50 t (42%)
डेमेर्सल फिनफ़िश लैंडिंग	22024.97 t (26%)	24008.92 t (28%)	25111.14 t (31%)
शेलफिश लैंडिंग	23099.84 t (28%)	21043.52 t (24%)	21674.54 t (27%)
सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किए गए किस्म	रिबन फिश (9%)	रिबन फिश (10%)	रिबन फिश (10%)
सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किए गए राज्य	गुजरात (39%)	गुजरात (37%)	गुजरात (37%)
सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किए गए बन्दरगाह	वेरावल (21%)	वेरावल (18%)	वेरावल (16%)
कुल नाव आगमन	30126	28483	30849

**Percentage of total catch*

सारांश

दिसंबर 2018 में, भारत के 44 प्रमुख मत्स्यन बंदरगाहों से 80378.18 टन समुद्री मत्स्य संसाधनों की कुल लैंडिंग दर्ज की गई, जहां देमेरसल फिनफिश और शेलफिश स्टॉक की तुलना में पेलेजिक फिनफिश ने बड़ी मात्रा में योगदान दिया। मत्स्यन मद-वार लैंडिंग को ध्यान में रखते हुए, महीने के दौरान प्रमुख योगदानकर्ता थे रिबन मत्स्य और इंडियन मैकरेल दूसरे स्थान पर रहे। दिसंबर के दौरान दर्ज किए गए कुल पकड़ का लगभग 82% पश्चिम तट से था और उत्तर पश्चिम क्षेत्र से सार्वोच्च पकड़ दर्ज की गई। इन समुद्री तटीय राज्यों में से, इस अवधि के दौरान गुजरात ने सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किया और वेरावल बंदरगाह ने उच्चतम लैंडिंग के साथ-साथ सर्वोच्च नाव आगमन भी की। इसके अलावा, दिसंबर 2018 के दौरान कैच की प्रवृत्ति पिछले महीनों की तुलना में काफी हद तक समान पाया गया।

गुणवत्ता जलकृषि उत्पादन पर क्रेता-विक्रेता बैठक

क्रेता-विक्रेता बैठक का उद्घाटन सत्र

संवर्धित श्रिम्प के योगदान के साथ भारत का समुद्री खाद्य निर्यात तेजी से बढ़ रहा है, वर्ष 2013-14 में 3.02 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर वर्ष 2017-18 में 5.66 लाख मीट्रिक टन हो गया है। यद्यपि पिछले 3-4 वर्षों के दौरान भारत से श्रिम्प के निर्यात में वृद्धि हुई है, फार्म में उगाने वाले श्रिम्प उत्पादों की अस्वीकृति भी बढ़ी, इसके परिणामस्वरूप यूरोपीय संघ, जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे हमारे पारंपरिक बाजारों द्वारा अधिक कड़े कानूनों और व्यापार बाधाओं को लागू किया गया।

अस्वीकृति और कड़े अवरोधों के कारण विकसित बाजार में श्रिम्प के आयात में गिरावट आई, जिसके परिणामस्वरूप कल्चर्डश्रिम्प एल. वन्नामी के फार्म गेट कीमतों में गिरावट आई। कल्चर्ड श्रिम्प में प्रतिजैविकी अवशेषों के खतरे को दूर करने के उद्देश्य से और संभव बहत्तर सुधारात्मक उपाय और हमारे समुद्री खाद्य निर्यात को बढ़ावा देने के लिए तथा निर्यातकों और कृषकों दोनों द्वारा स्व-अनुशासनात्मक कार्रवाई के माध्यम से अस्वीकृति को कम करने हेतु उपयुक्त निर्णय लेने दिनांक 29 जनवरी को तलोजा, नवी मुंबई में एक क्रेता-विक्रेता बैठक का आयोजन किया गया।

क्रेता विक्रेता मिलने को इस तरह से डिज़ाइन किया गया कि इसे सुबह में तकनीकी सत्र में सम्मिलित किया गया, जहां एल. वन्नामी की विकसित कल्चर तकनीक जलकृषि विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत किया गया, इसके बाद कृषकों को कई मुद्दों जैसे खाद्य उत्पादों की अनुमार्गनीयता की क्षमता में सुधार के लिए नीतियों का विकास, मजबूत गुणवत्ता शासन और आश्वासन की स्थापना, जलकृषि भूमि पट्टा नीति और जलकृषि का विविधीकरण पर चर्चा करने के अवसर दिए गए। इसके बाद भारतीय समुद्री खाद्य निर्यातक संघ के प्रतिनिधि ने निर्यात व्यापार, गुणवत्ता मानकों की आवश्यकताओं, प्रतियोगिताओं और व्यापार के लिए तकनीकी और गैर तकनीकी बाधाओं पर एक संक्षिप्त जानकारी दी।

इस बैठक ने एक-से-एक विचार-विमर्श के लिए स्थान प्रदान किया और अपने भविष्य व्यापार के लिए दीर्घकालिक अनुबंध शुरू किए।

श्री राजकुमार एस. नायक, उप निदेशक, एमपीईडीए द्वारा बैठक में उपस्थित लोगों का स्वागत और बैठक का अवलोकन प्रस्तुत करते हुए बैठक सम्पन्न हुए। उन्होंने

अनुमार्गनीयता की आवश्यकताओं के अनुपालन हेतु श्रिम्प फार्म नामांकन की आवश्यकता के बारे में बताया। एल. वन्नामी के घातीय उत्पादन के कारण उत्पन्न चुनौतियों और मुद्दों के बारे में भी समझाया गया।

उन्होंने कृषकों को इक्वाडोर जैसे देशों के समान उत्पादकता बढ़ाने के लिए नई तकनीकों को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने मात्स्यिकी विभाग, महाराष्ट्र सरकार से महाराष्ट्र में अधिक जलकृषि क्षेत्र को जोड़ने के लिए कृषकों को पूर्ण समर्थन देने के लिए भी अनुरोध किया।

बैठक का उद्घाटन श्री अशोक जावले, सहायक मात्स्यिकी आयुक्त (खारा पानी), महाराष्ट्र सरकार ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में, श्री अशोक ने कहा कि महाराष्ट्र में बहुत सारी भूमि उपलब्ध है और नमक भूमि, खार भूमि और मैंग्रोव भूमि जैसे ये भूमि खंड जो राजस्व विभाग सहित विभिन्न विभागों के तहत हैं, इन संभावित भूमि को कृषकों को आबंटित करके जलकृषि के लिए प्रभावी रूप से विकसित किया जा सकता है।

श्री काशीनाथ तारी, सचिव, महाराष्ट्र जलकृषि कृषक संघ (एमएएफ़ए), ने कहा कि कृषक और निर्यातक एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंने पहली बार इस तरह की एक क्रेता-विक्रेता बैठक का आयोजन के लिए पहल करने हेतु एमपीईडीए महाराष्ट्र को धन्यवाद दिया।

अनुरोध यह किया कि महाराष्ट्र में जलकृषि के विकास हेतु मास्टर प्लान तैयार करें (खारा पानी के साथ-साथ लवणीय जल प्रभावित भूमि और अंतर्देशीय तालाब और जलाशय कल्चर में)। उन्होंने यह भी बताया कि आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में जलकृषि का अत्यधिक विकास एमपीईडीए के ओसपार्क, तासपार्क, आरजीसीए जैसे कार्यकलापों के परिणामस्वरूप है।

यह बताते हुए कि एमपीईडीए भारत में तटीय जलकृषि विकास में आगे बढ़ने वाला शक्ति है, उन्होंने कहा की महाराष्ट्र में अनुत्पादक रहने वाली अधिकांश नमक पैन भूमि को श्रिम्प कृषि के लिए प्रभावी रूप से इस्तेमाल किया जा सकता है।

तलोजा, नवी मुंबई में आयोजित क्रेता-विक्रेता बैठक के दौरान निर्यातकों और कृषकों के साथ विचार-विमर्श सत्र

श्री रूस्तम ईरानी, अध्यक्ष, भारतीय समुद्री खाद्य निर्यातक संघ (एसईएआई), महाराष्ट्र ने महाराष्ट्र में निर्यात-मुद्दों और चुनौतियों के लिए गुणवत्ता जलकृषि उत्पादों पर चर्चा करने हेतु पहली बार इस तरह की बैठक बुलाने के लिए एमपीईडीए को बधाई दी। यह देखते हुए कि महाराष्ट्र जलकृषि विकास में गुजरात और आंध्र प्रदेश जैसे अन्य राज्यों से पीछे है, श्री रूस्तम ने कहा कि कृषकों और निर्यातकों के संयुक्त प्रयासों से ही इसमें परिवर्तन और विकास हो सकता है।

चूंकि समुद्री खाद्य एक वैश्विक व्यवसाय है और इसकी कीमतें अंतरराष्ट्रीय नीतियों, द्विपक्षीय संबंधों, प्रतियोगी देशों के उत्पादन, गुणवत्ता मानकों आदि द्वारा नियंत्रित होती हैं और इसलिए, श्रिम्प की कीमतों को अकेले चर्चा करके तय नहीं किया जा सकता है, उन्होंने कहा।

डॉ. राजेंद्र दामले ने "महाराष्ट्र में एल. वन्नामी कृषि की चिरस्थाई संभावनाएँ" पर एक प्रस्तुति दी। उन्होंने महाराष्ट्र में एल. वन्नामी के तालाब की तैयारी, जल विनिमय, गलन, बीज चयन, प्रोबायोटिक्स के लाभ पर शोध, विभिन्न कल्चर तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया।

डॉ. अजीतसिंह पाटिल, अध्यक्ष, महाराष्ट्र जलकृषि कृषक संघ (एमएएफ़ए) महाराष्ट्र ने महाराष्ट्र में जलकृषि की धीमी गति के विभिन्न कारणों के बारे में समझाया और सभी कृषकों और निर्यातकों को बदलाव लाने के लिए एकजुट होने को कहा।

श्री अभिषेक पवार और श्री संदीप डोंगरे, अध्यक्ष, तलोजा निर्माता संघ, निर्यातकों / खरीदार पक्ष से सामना किया जा रहे मुद्दों के बारे में बताया। उन्होंने किसानों को आश्वासन दिया कि उन्हें गुणवत्ता वाले उत्पादों को अच्छे दाम मिलेंगे। उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि भूरे सिर के कारण, श्रिम्प को चीन में कीमत कम मिल रही है।

फिर उन्होंने विभिन्न रंग ग्रेड, इस तरह के रंगों को प्राप्त करने के तरीके और विपणन में इसके महत्व को प्रदर्शित किया। इस सत्र के बाद किसानों और निर्यातकों को भविष्य के व्यापारिक संपर्कों हेतु एक-से-एक बैठकें करने का अवसर मिला।

खरीदार और विक्रेता पक्षों, सहायक मात्स्यिकी आयुक्त, महाराष्ट्र सरकार और एमपीईडीए अधिकारियों के प्रतिनिधियों के साथ एक समिति बनाई गई। श्री संदीप डोंगरे, महासचिव, एसईएआई, महाराष्ट्र चैप्टर के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ बैठक संपन्न हुई।

नेटफिश द्वारा बन्दरगाह सफाई

टेंगिंगुंडी में मछुआरों को स्वच्छता किट वितरण

नेटफिश ने बंदरगाह स्वच्छता के बारे में मछुआरों और बंदरगाह श्रमिकों को संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से दिनांक 19 और 28 जनवरी 2019 को क्रमशः कर्नाटक के उत्तरा कन्नड़ जिले के बेलेकी और थेंगिंगुंडी मत्स्यन बंदरगाह पर दो स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया। दोनों क्लीन-अप ड्राइव में मछुआरों, बन्दरगाह के श्रमिकों और राज्य मात्स्यिकी विभाग के अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी थी। नेटफिश के सदस्य गैर सरकारी संगठन स्कोड्वेस ने कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित करने में अपना समर्थन प्रदान की।

बेलेकेरी में कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, श्री कृष्णा बनवालिकर, अध्यक्ष, बेलेकेरी मछुआरा संघ ने कहा कि बंदरगाह परिसर की सफाई में मात्स्यिकी विभाग के साथ मछुआरों को सहयोग करना चाहिए। श्री नारायण के.ए. ने बंदरगाह सफाई कार्यक्रम के उद्देश्य और कर्नाटक में गुणवत्ता प्रबंधन और चिरस्थाई मात्स्यिकी के संबंध में नेटफिश की गतिविधियों के बारें व्याख्यान दी। उन्होंने मछुआरों को नाव में और साथ ही साथ बन्दरगाहों में स्वच्छता अभ्यास करने की भी सलाह दी। बंदरगाह सफाई कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, 45 स्वच्छता किट विभिन्न नावों से चुने गए मछुआरों के बीच वितरित किए गए। प्रत्येक स्वच्छता किट में लिक्विड हैंड वॉश, हेयर ऑयल, कंघी, टूथ पेस्ट और ब्रश शामिल थे। प्रतिभागियों के लिए मत्स्यन बन्दरगाह और नीलामी हॉल की सफाई का उचित तरीके का प्रदर्शन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के समापन के रूप में नीलामी हॉल, वार्फ़ और बन्दरगाह परिसर को सभी प्रतिभागियों द्वारा संयुक्त रूप से साफ किया गया।

बेलेकी में क्लीन अप में मछुआरा युवक सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं।

तेंगिंगुंडी में सफाई कार्यक्रम का उद्घाटन टेंगिंगुंडी में श्री कृष्ण वी मोगेरा, मछुआरा संघ के सदस्य ने किया। बंदरगाह स्वच्छता पर एक संक्षिप्त व्याख्यान, पत्रक का वितरण, स्वच्छता किट का वितरण और इसके बाद प्रदर्शन आयोजित किए। टीम द्वारा पूरा बंदरगाह, नीलामी हॉल, घाट क्षेत्र आदि को साफ किया गया। स्थानीय समाचार पत्रों में साफ -सफाई की घटना के बारे में रिपोर्ट प्रकाशित की गई।

मछुआरों की सुरक्षा और चिरस्थाई मात्स्यिकी पर जागरूकता बैठक

जागरूकता कार्यक्रम में मत्स्यन नाव मालिक

दिनांक 07 जनवरी 2019 को एमपीईडीए के क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्ची ने नेटफिश के साथ संयुक्त रूप से आंकर हाउस, चुल्लिक्कल, कोच्ची में मछुआरों की सुरक्षा के लिए ए व आई योजना और चिरस्थाई मात्स्यिकी पर एक जागरूकता बैठक आयोजित किया। भाग लेने वाले 28 प्रतिभागियों में से 21 मत्स्यन नाव के मालिक थे। श्री प्रिंस एस एक्स, उप निदेशक और श्री श्रीजित पी.टी, सहायक निदेशक ने एमपीईडीए, कोच्ची के क्षेत्रीय प्रभाग का प्रतिनिधित्व किया। श्रीमती संगीता एससीओ-केरल दक्षिण ने नेटफिश का प्रतिनिधित्व किया और श्री जोस एब्रहाम, सहायक निदेशक ने राज्य मात्स्यिकी विभाग का प्रतिनिधित्व किया।

मछुआरा समुदाय के लिए फायदेमंद विभिन्न योजनाओं पर विस्तृत प्रस्तुतियां दी गईं। प्रतिभागियों को चिरस्थाईता की आवश्यकता और उसे प्राप्त करने के लिए अपनाए जाने वाले उपायों के बारे में जागरूक किया गया। मछुआरों की सुरक्षा की आवश्यकता के बारे में भी उन्हें समझाई गई।

मेसर्स मराइन इलेक्ट्रिकल्स इंडिया और मेसर्स एलेक्ट्रोनिक लैब के अधिकारियों द्वारा उत्पाद विनिर्देश और उपयोग पर व्याख्यान दी। मछुआरों ने लाइव ऑनबोर्ड डेमो के लिए पूछा और समान को ओईएम द्वारा शीघ्र ही इसकी व्यवस्था की। यह तय किया गया कि उपकरण के ऑनबोर्ड प्रदर्शन के बाद मत्स्यन नाव के मालिक वित्तीय सहायता पर निर्णय लेंगे। कार्यक्रम के अंत में मत्स्य के प्रमाणन के लिए एक आवेदन, वीएमएस के लिए पांच आवेदन और बीआरडी/टीईडी/स्क्वायर मेष कॉड एंड के लिए दस आवेदन प्राप्त हुए।

उपकरण विक्रेताओं के साथ श्री श्रीजित पी टी, सहायक निदेशक और श्री एस एक्स प्रिंस, उप निदेशक, एमपीईडीए

नई एसएफ़सी योजना को लोकप्रिय बनाने हेतु आयोजित बैठक

कार्यक्रम का एक परिदृश्य

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, चेन्नई ने दिनांक 5 जनवरी 2019 को कारैक्कल और दिनांक 6 जनवरी 2019 को नागपट्टिनम और नंबियार नगर में राज्य मात्स्यिकी अधिकारियों और मछुआरा संघ के सदस्यों के साथ एक बैठक आयोजित किया। बैठक में एसबीवीएमएस और बीआरडी के पैनलबद्ध आपूर्तिकर्ताओं को आमंत्रित किया गया था। मेसर्स एलेक्रोनिकलाब इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई ने बैठक में भाग लिया और तीनों स्थानों पर मछुआरों के लिए अपने उपकरणों का प्रदर्शन किया।

कारैक्कल

उपस्थित लोगों को मछुआरों को योजना के बारे में समझाते हुए उप निदेशक, एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, चेन्नई के व्याख्यान के साथ बैठक की शुरुआत हुई। उन्होंने मत्स्यन के दौरान ऑनबोर्ड पर उपग्रह आधारित वीएमएस रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने मछुआरों को चिरस्थाई मत्स्यन के लिए स्क्वेयर मेष कोड एंड खरीदने का भी सुझाव दिया। मेसर्स एलेक्टरोनिकलाब इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई के अधिकारी ने एसबीवीएमएस के लाभ के बारे में बताया।

एसबीवीएमएस पर एक पत्रक के साथ-साथ कीमतों सहित इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का विवरण दिया गया था। संघ के सूचना पट पर मूल्य चार्ट चिपकाया गया और उसी की प्रतिलिपि कारैक्कल मात्स्यिकी विभाग के अधिकारियों को दी गई। चूंकि कारैक्कल में मछुआरों का संघ नहीं था, बैठक में 29 ग्राम पंचायत सदस्य और मछुआरे भाग लिए।

नागपट्टिनम

उप निदेशक, एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, चेन्नई ने बैठक में उपस्थित 45 मछुआरों को एसबीवीएमएस के योजनाओं और लाभों और स्क्वेयर मेष कोड एंड के बारे में बताया। मेसर्स एलेक्ट्रोनिकलाब इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई ने बैठक में भाग लिया और एसबीवीएमएस (फोन और पाठ प्रकार) के लाभ के बारे में बताया।

मछुआरों को बताया गया कि मात्स्यिकी विभाग तमिलनाडु तट पर 10 नावों के समूह को एक या दो एसबीवीएमएस देने की प्रक्रिया में है। मछुआरों के संघ ने नवीकरण और पुनर्भरण राशि की छूट का सुझाव दिया। स्क्वेयर मेष कोड एंड के बारे में, मछुआरों ने बद्धी को संलग्न करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता को सूचित किया।

नंबियार नगर, नागै

नंबियार नगर के मछुआरों द्वारा अनुरोध किए जाने पर, 24 मछुआरों के लिए एक अलग बैठक उसी दिन एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, चेन्नई द्वारा आयोजित किया गया। उपस्थित लोगों ने नागपट्टिनम में अपने समकक्षों की तरह समान सुझाव दिए।

कैप्चर फिशरीज के लिए एमपीईडीए योजनाओं को लोकप्रिय बनाने हेतु आयोजित बैठक

श्री ए. लाहिड़ी, उप निदेशक, एमपीईडीए दर्शकों को संबोधित करते हुए

पश्चिम बंगाल यूनाइटेड फिशरमेन एसोसिएशन (डबल्यूबीयूएफ़ए) द्वारा उप निदेशक, एमपीईडीए और राज्य समन्वयक, नेटफिश की उपस्थिति में दिनांक 20 जनवरी 2019 को समुद्री मात्स्यिकी से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर एक बैठक बुलाई गई। तीन समुद्रीतटीय जिलों में यानि उत्तर 24 परगना, दक्षिण 24 परगना और पश्चिम बंगाल के पुरबा मेदिनीपुर फैलने वाली संघ के लगभग 30 सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया, जिसकी अध्यक्षता डबल्यूबीयूएफ़ए के अध्यक्ष ने की।

सुंदरबन क्षेत्रों के झीलों और नदियों से कीचड़ केकड़ा ओर मत्स्यों की जंगली फसल के लिए वन विभाग द्वारा जारी किए गए नाव लाइसेंस प्रमाण पत्र (बीएलसी) की समस्या बैठक में उठाए गए मुद्दों में से एक था।

उप निदेशक, एमपीईडीए ने कैप्चर मात्स्यिकी क्षेत्र के लिए मत्स्यन नावों पर वीएमएस की स्थापना और निर्यात के लिए इसके महत्व के संबंध में एमपीईडीए की योजना प्रस्तुत की। उन्होंने सैटेलाइट आधारित पोत निगरानी प्रणाली के कार्य, पोत की निगरानी और जमीन से नाव और नाव से जमीन आदि की सूचना प्रसारण के बारे में भी समझाया।

एमपीईडीए ने समुद्री संसाधनों के संरक्षण के लिए बाय-कैच रिडक्शन डिवाइसेज (बीआरडी) का उदघाटन किया है, उन्होंने कहा, नाव मालिकों से वे अपने ट्रोल नेट में स्क्वेयर मेष पैनेल की स्थापना करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा की ऐसे करने से किशोरियों को नेट से भागने में मदद मिलेगी और इससे चिरस्थाई मत्स्यन आदतों में मदद मिलेंगे।

नेटफिश के राज्य समन्वयक ने कहा कि समुद्र में मछुआरों की रक्षा और सुरक्षा के लिए वीएमएस आवश्यक है, क्योंकि यह अपने और तट के बीच उचित संचार सुनिश्चित करता है।

डब्ल्यूबीयूएफए के अध्यक्ष ने ट्रॉवल नेट में स्क्वायर मेष कॉड एंड स्थापित करने पर सहमति व्यक्त की और नेट की दक्षता का अध्ययन करने के लिए स्क्वेयर पैनल का एक नमूना प्रदान करने के लिए एमपीईडीए से अनुरोध किया। डबल्यूबीयूएफ़ए के सचिव ने वीएमएस स्थापित करने के प्रस्ताव का स्वागत किया, क्योंकि यह मछुआरों के साथ-साथ नाव मालिकों के लिए मत्स्यन के दौरान उनकी नावों की निगरानी करने और मत्स्यन और संबंधित गतिविधियों के बारे में आवश्यक जानकारी भी प्राप्त करने में बहुत मददगार होंगे।

सचिव, दीघा मछुआरों और मत्स्या व्यापारी संघ ने उप निदेशक से जनवरी के अंत में दीघा मोहना, पूर्बा मेदिनीपुर में वीएमएस सेट के प्रदर्शन के लिए नाव मालिकों और एमपीईडीए के पैनलबद्ध आपूर्तिकर्ताओं के बीच एक बैठक की व्यवस्था करने का अनुरोध किया।

मछुआरों की सुरक्षा और चिरस्थाई मात्स्यिकी पर एमपीईडीए योजना पर जागरूकता बैठक

कार्यक्रम का परिदृश्य

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई ने भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण (एफ़एसआई), सस्सोंडॉक बन्दरगाह, कोलाबा, मुंबई में दिनांक जनवरी 2019 को मछुआरों की सुरक्षा (वीएमएस) और चिरस्थाई मात्स्यिकी पर एमपीईडीए के योजना पर एक जागरूकता बैठक आयोजित किया। इस बैठक से आगे, एमपीईडीए के अधिकारियों ने दिनांक 05 जनवरी, 2019 को मात्स्यिकी आयुक्त और मात्स्यिकी संयुक्त आयुक्त एक प्रारंभिक बैठक की और एमपीईडीए के योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

लगभग 50 हितधारकों ने बैठक में भाग लिया जिसमें श्री राजेन्द्र जादव, मात्स्यिकी संयुक्त आयुक्त, माहाराष्ट्र सरकार; डॉ. महेशकुमार, उप महानिदेशक (अभियांत्रिकी), एफएसआई; श्री विनोद कुमार, वरिष्ठ मात्स्यिकी वैज्ञानिक, एफएसआई; मेसर्स इलेक्ट्रोनिकल्लब इंडिया प्रा. लिमिटेड (वीएमएस का एक सूचीबद्ध विक्रेता) और श्री संतोष कदम, राज्य समन्वयक, एमपीईडीए-नेटफिश, उपस्थित थे।

श्री राजकुमार एस नाइक, उप निदेशक, एमपीईडीए ने सभी उपस्थित लोगों को बैठक के उद्देश्य के बारे में बताया और कहा कि एमपीईडीए मछुआरों की सुरक्षा, चिरस्थाई मात्स्यिकी के प्रति उत्सुक है और वित्तीय सहायता योजनाओं के लाभ पर जोर दिया। डॉ. महेश कुमार ने चिरस्थाई मात्स्यिकी की आवश्यकता के बारे में बराया और कहा कि कई विकसित देश संसाधन संरक्षण और अनिच्छुक और संकटग्रस्त संसाधनों के उपभोग के प्रति अनिच्छुक हैं। श्री राजेंद्र जाधव, मात्स्यिकी संयुक्त आयुक्त, महाराष्ट्र सरकार ने स्क्वेयर मेष नेट और टीईडी के महत्व के बारे में बताया और एमपीईडीए योजनाओं का सही उपयोग करने के लिए मछुआरों को प्रोत्साहित किया।

श्री भूषण पाटिल, सहायक निदेशक, एमपीईडीए ने एमपीईडीए योजनाओं पर एक प्रस्तुती दी। श्री संतोष कड़म, नेटफिश के महाराष्ट्र समन्वयक ने स्क्वेयर मेष नेट के महत्व को प्रस्तुत किया और नेटफिश कार्यक्रमों के माध्यम से महाराष्ट्र के कोकण क्षेत्र में उपयोग किए जाने वाले स्क्वेयर मेष की कुछ सफलता की कहानियों को शेयर किया।

मेसर्स एलेक्ट्रोनिकलाब इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने उत्पाद की विशेषताओं जैसेकि इनमारसैट आईसाटफोन-2 और पंजीकरण के लिए आवश्यक दस्तावेज़ों के बारे में समझाया।

उप निदेशक, एमपीईडीए, ने सभी पनधारियों से अनुरोध किया कि वे एमपीएडीए सहायता हेतु आवेदन करने के लिए सूचना पत्र के प्रारूप और आपूर्ति की सूचना पत्र प्रारूप और उनके संदर्भ के लिए योजना प्रतियों को एकत्र करें। सभी मछुआरों ने अधिकारियों से कहा कि उन्हें एक सप्ताह का समय चाहिए और वे इसे उपकरण की आवश्यकता को सूचित करके अपने समाजों के माध्यम से वापस लौटाएँगे। श्री राजकुमार नायक की धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक समाप्त हुआ।

समुद्री खाद्य प्रसंस्करण संयंत्र श्रमिकों के लिए पीएमकेवीवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम

श्री राम अधर गुप्ता, उप निदेशक, एमपीईडीए दर्शकों को संबोधित करते हुए

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के तहत समुद्री खाद्य प्रसंस्करण संयंत्र श्रमिकों के लिए प्रशिक्षण का पहला बैच दिनांक 15 से 17 जनवरी 2019 को मेसर्स कैस्टलरॉक फिशरीज प्राइवेट लिमिटेड, यूनिट-III, वेरावल में आयोजित किया गया। श्री राम अधर गुप्ता, उप निदेशक, एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, वेरावल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। समुद्री खाद्य प्रसंस्करण संयंत्र के गुणवत्ता प्रबंधक ने उदघाटन भाषण दिया और श्री श्रीमाली विनोद कुमार एम, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, वेरावल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अभिविन्यास कार्यक्रम

पीएमकेवीवाई किट के साथ प्रशिक्षुओं का एक दृश्य और पूर्व-स्क्रीनिंग प्रगति पर

सत्ताईस प्रसंस्करण संयंत्र समुद्री खाद्य श्रमिकों, जिन्हें प्रोटोकॉल के अनुसार राष्ट्रीय कौशल विकास सहयोग (एनएसडीसी) के कौशल विकास और प्रबंधन प्रणाली (एसडीएमएस) के तहत पंजीकृत और नामांकित किया गया है, को संयंत्र के विभिन्न पहलुओं, उपकरण और व्यक्तिगत स्वच्छता, स्वच्छता के पहलू, पूर्व प्रसंस्करण से लेकर पैकिंग आदि तक कई चरणों में उत्पाद की हैंडलिंग पर प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण का नेतृत्व श्री श्रीमाली विनोद कुमार एम, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, वेरावल ने किया। प्रशिक्षण के दूसरे और तीसरे दिन सेक्टर काउंसिल अर्थात् खाद्य उद्योग, क्षमता और कौशल पहल सेक्टर काउंसिल (एफ़आईसीएसआई) से प्रतिनियुक्त एसेसर द्वारा प्रशिक्षुओं का मूल्यांकन किया गया।

'समुद्री खाद्य प्रसंस्करण संयंत्रों से बहि:स्राव निर्वहन का पर्यावरणीय प्रभाव और इसके नियंत्रण के उपाय' पर अध्ययन

129वीं प्राधिकरण की बैठक में यह सुझाव दिया गया कि एमपीईडीए "प्रसंस्करण संयंत्रों में अपनाए गए प्रदूषण नियंत्रण उपायों और पुन: उपयोग" के लिए पानी के उपचार" पर एक अध्ययन करना चाहिए। इसके बाद, 'समुद्री खाद्य प्रसंस्करण संयंत्रों से बहि:स्राव बहाव का पर्यावरणीय प्रभाव और इसके नियंत्रण उपाय' पर अध्ययन के संचालन के लिए एक एजेंसी नियुक्त करने के लिए एक अग्रणी दैनिक के राष्ट्रीय एडिशन के माध्यम से निविदाएं आमंत्रित की गईं। सीएसी की बैठक दिनांक 22 नवंबर, 2017 को आयोजित की गई फिर मेसर्स अल्ट्राटेक पर्यावरणीय परामर्श और प्रयोगशाला, कोच्ची को काम सौंपने का सिफ़ारिश किया गया।

अध्ययन के क्षेत्र थे (i) समुद्र प्रसंस्करण संयंत्रों (एसपीपी) में स्थापित ईटीपी (दोनों सामान्य और स्वतंत्र) के संचालन की प्रभावशीलता का निर्धारण, (ii) प्रसंस्करण संयंत्रों से रिपोर्ट किए गए हिमशीतित, ठंडा, सूखा संरक्षण प्रणाली के प्रदूषण के मुद्दे, (iii) प्रदूषण नियंत्रण के लिए समुद्री खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों में ईटीपी के संचालन के लिए वर्तमान मुद्दे, (iv) अध्ययन के लिए पहचानी गई प्रसंस्करण इकाइयों के लिए ईटीपी विज़-ए-विज़ की इष्टतम क्षमता की सिफारिश, (v) प्रदूषण नियंत्रण में मुद्दों को दूर करने के लिए व्यावहारिक उपाय सुझाना, (vi) इष्टतम ईटीपी मॉडल का सुझाव देना (पारिस्थितिक रूप से / ऊर्जा कुशल) समुद्री खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों में उपयोग के लिए, (vii) समुद्री खाद्य प्रसंस्करण संयंत्रों में पुन: उपयोग के लिए ईटीपी में उपचारित अपशिष्ट जल का उपचार और (viii) सीफूड प्रोसेसिंग प्लांट्स में ईटीपी के अनुशंसित मॉडल स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता की ओर से सुझाव देना आदि है।

अध्ययन में अनुसूची के अनुसार नमूनीकरन/ सर्वेक्षण को विभिन्न तटीय राज्यों में स्थित चयनित 106 प्रसंस्करण संयंत्रों में सलाहकार द्वारा किया गया, और 23 अगस्त, 2018 को 'समुद्री खाद्य प्रसंस्करण संयंत्रों से बहि:स्राव निर्वहन का पर्यावरणीय प्रभाव और इसके नियंत्रण उपाय' के अध्ययन पर अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। रिपोर्ट को एमपीईडीए के सभी फील्ड कार्यालयों को परिचालित किया गया और उनकी टिप्पणियों को भी रिपोर्ट में शामिल किया गया। सलाहकार ने दिनांक 29 जनवरी 2019 को अंतिम रिपोर्ट पर एमपीईडीए के अध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष एक प्रस्तुति भी दी।

सलाहकार ने समुद्री खाद्य प्रसंस्करण संयंत्रों (एसपीपी) में किए गए प्रभाव अध्ययन के आधार पर कुछ सिफारिशें की हैं। निष्कर्षों को अध्ययन के लिए कवर की गई इकाइयों और भारतीय समुद्री खाद्य निर्यातक संघ को भी सूचित किया गया।

स्कूली बच्चों के लिए जागरूकता कार्यक्रम

बेहतर सीख के लिए बच्चों को गतिविधियाँ प्रदान की गईं

तटीय क्षेत्रों के स्कूली छात्रों की पहचान मत्स्य संसाधन संरक्षण गतिविधियों में शामिल होने वाले संभावित समूह के रूप में की जाती है। तटीय क्षेत्रों के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए मत्स्य संसाधनों के सर्वेक्षण और चिरस्थाई मत्स्यन के साथ-साथ मत्स्य की गुणवत्ता प्रबंधन पर जागरूकता आदि शामिल है।

इस अभियान का लक्ष्य इन बच्चों को मत्स्यन और संबद्ध गतिविधियों में लगे हुए अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को संदेश भेजना है।

जनवरी 2019 में, नेटफिश ने ओडिशा, तमिलनाडु और केरल के नियमित स्कूलों के साथ-साथ व्यावसायिक स्कूलों के बच्चों को शिक्षित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

इन अभियानों का विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है।

क्रम सं.	कार्यक्रम की तिथि	स्थान	कार्यक्रम में भाग लिए छात्रों की संख्या
1	7.1.19	सेंट मेरीस हाई स्कूल, पल्लिपुरम, केरल	100
2	11.1.19	सरकारी वीएचएसएस, काईपामंगलम, केरल	50
3	12.1.19	यू पी स्कूल, नेहरू बंगला, पारदीप, ओडिशा	30
4	15.1.19	सरकारी हाई स्कूल, कडप्पुरम, केरल	60
5	15.1.19	सरकारी वीएचएसएस, कडप्पुरम, केरल	110
6	16.1.19	डॉ. जादुनाथ जूनियर वोकेशनल कॉलेज, बालासोर, ओडिशा	30
7	18.1.19	तारुविकुलम सरकारी हायर सेकंडरी स्कूल, तारुविकुलम, तमिलनाडु	150
8	18.1.19	सरकारी हाई स्कूल, कडप्पुरम, केरल	70
9	19.1.19	टी. सांवरियापुरम आरसी सरकारी हाई स्कूल, तूतीकोरिन, तमिलनाडु	200

पारदीप में स्कूली बच्चों के लिए जागरूकता कार्यक्रम

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, छात्रों को तटीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण के महत्व, अवैध मत्स्यन के बुरे प्रभाव और मत्स्यन संसाधनों की कमी के बारे में सिखाया गया।

सांवरियापुरम स्कूल में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

समुद्र के रहन-सहन और संसाधनों के चिरस्थाई उपयोग के मुद्दे, मैंग्रोव वनस्पति का संरक्षण, समुद्री कछुए और पर्यावरण के साथ मत्स्य बीज जहां वे निवास करते हैं को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया। इसके अलावा, मत्स्य संसाधन की वर्तमान स्थिति, राज्य के साथ-साथ देश से किए जानेवाले निर्यात, मत्स्य की गुणवत्ता प्रबंधन और

Drawing competition for School children

व्यक्तिगत स्वच्छता का भी वर्णन किया गया। संरक्षण और मत्स्य की गुणवत्ता पर नेटफिश के पत्रक वितरित किए गए और ''समुद्री संसाधनों के संरक्षण'' पर वृत्तचित्र और एनीमेशन फिल्में छात्रों को दिखाई गईं।

तमिलनाडु के कार्यक्रमों में ''हानिकारक प्रभाव और तटीय क्षेत्रों से प्लास्टिक कचड़े का उन्मूलन'' पर कवितापाठ प्रतियोगिताएँ, ''तटीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण'' विषय पर रेखा-चित्र प्रतियोगिता और ''मत्स्य और मात्स्यिकी संसाधनों के संरक्षण'' पर निबंध लेखन प्रतियोगिता आदि शामिल थे। सभी प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र दिए गए।

नेटफिश द्वारा समुद्री सुरक्षा प्रशिक्षण

नेटफिश आमतौर पर मछुआरों, मत्स्यन नाव चालकों और चालक दल के लिए समुद्री सुरक्षा और नौपरिवहन पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करता है, ताकि उन्हें सुरक्षित मत्स्यन के लिए सुसज्जित किया जा सके। जनवरी 2019 में, इस तरह के छह कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षुओं को समुद्र में सुरक्षा और सुरक्षा, नाव पर सुरक्षा के उपाय, मत्स्यन यानों के पंजीकरण और लाइसेंस का महत्व, लाइफ जैकट जैसे जीवन रक्षक उपकरण का उपयोग, लाइफबॉय, संकट चेतावनी ट्रांसमीटर आदि और संकट के दौरान विभिन्न संचार उपाय के बारे में जागरूक किया गया। उन्हें सुरक्षा उपकरणों के प्रदर्शन और आपातकालीन स्थिति को प्रबंधित करने के तरीकों के माध्यम से व्यक्तिगत सुरक्षा पर भी प्रशिक्षित किया गया। भटकल में आयोजित कार्यक्रम में नेटफिश अधिकारियों के साथ तटीय पुलिस भी शामिल हुई और पुलिस कर्मियों ने समुद्री सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं को समझाया और नौपरिवहन और लाइफजैकेट और लाइफबॉय का उपयोग करने के तरीके के बारे में प्रदर्शन किया।

आयोजित कार्यक्रमों का विवरण तालिका में है।

क्रम सं.	कार्यक्रम तारीख	स्थान	लाभभोगियों की संख्या
1	7.1.19	नागपट्टिनम	30
2	10.1.19	पारदीप	30
3	26.1.19	मछलीपट्टिनम	30
4	28.1.19	पॉण्डिचेरी	30
5	29.1.19	काशीमेडु	30
6	29.1.19	भटिकल	35

मछलीपट्टिनम में जीपीएस प्रशिक्षण कार्यक्रम

आयोजित किए गए कुछ कार्यक्रम विशेष रूप से जीपीएस सिस्टम और इसके संचालन पर थे, जैसेकि जीपीएस का कार्य, विभिन्न प्रकार के उपलब्ध जीपीएस उपकरण, उपग्रह जीपीएस की आवश्यकता और अनुमार्गणीयता प्रणाली में इसका महत्व आदि के बारे में समझाया गया और एक वेपॉइंट की रिकॉर्ड करने के लिए आवश्यक प्रक्रियाएँ, रिकार्ड किए गए वेपॉइंट तक नेविगेट करना, बचाव की स्थितियों में जीपीएस वेपॉइंट का उपयोग करना,समस्या निवारण आदि के बारे में समझाया गया।

चिरस्थाई श्रिम्प कृषि एवं विविध प्रजातियों के जलकृषि' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 15 से 17 जनवरी, 2019 तक एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरि के कार्यालय में चिरस्थाई श्रिम्प कृषि और विविध प्रजातियों के जलकृषि पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 24 कृषक, उद्यमी, एसएचजी ने भाग लिया।

डॉ. टी आर जिबीन कुमार, उप निदेशक, एमपीईडीए प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए।

उद्घाटन के आगे, डॉ. विष्णुदास आर. गुणगा, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए, ने श्रिम्प/झींगा कल्चर के लिए एमपीईडीए की विभिन्न गतिविधियों की एक रूपरेखा प्रस्तुत की और भारत में विशेष रूप से महाराष्ट्र में श्रिम्प/झींगा कृषि की गुंजाइश और स्थिति की जानकारी दी।

फील्ड संदर्शन के दौरान एमपीईडीए के कीचड़ केकड़ा डेमो फार्म में प्रशिक्षणार्थी

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार, उप निदेशक, एमपीईडीए ने एमपीईडीए द्वारा इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य और वे कृषकों के साथ-साथ नए उद्यमियों के लिए भी कैसे फायदेमंद हैं, के बारे में समझाया। उन्होंने जलकृषि कृषकों के लिए उपलब्ध एमपीईडीए की विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र में श्री षाजी जॉर्ज, सहायक निदेशक, उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी और श्री एस. पांडियाराजन, सहायक निदेशक, उप क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल भी उपस्थित थे।

उद्घाटन कार्यक्रम के बाद आयोजित तकनीकी सत्र में व्याख्यान, फील्ड संदर्शन और अगले तीन दिनों तक लगातार अनुभव साझा करना आदि शामिल थे। डॉ. विष्णुदास आर. गुणगा ने साइट चयन से लेकर फ़सल कटाई की तकनीक से संबंधित विषयों को कवर किया। डॉ. जिबिनकुमार ने एमपीईडीए और जलकृषि विकास और प्रमाणन हेतु विभिन्न योजनाओं पर एक प्रस्तुति दी। सीफूड उत्पादों के मूल्यवर्धन पर एक विशेष व्याख्यान भी दिया गया। श्री पांडियाराजन ने विविध प्रजातियों के जलकृषि के बारे में भी बात की। प्रशिक्षणार्थियों के साथ अपने अनुभव शेयर करने के लिए श्री अरुण अलसाए, प्रगतिशील कृषक को एक संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया।

फार्म संदर्शन के दौरान प्रशिक्षु एक वन्नामी फार्म में

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन, एमपीईडीए के मिट्टी केकड़ा प्रदर्शन फार्म के लिए प्रशिक्षुओं को रत्नागिरी जिले के बकले गांव में श्रीमती नीता वैती के फार्म में फील्ड संदर्शन की भी व्यवस्था की गई थी। प्रशिक्षुओं ने बाकलेविल में श्रीमती मनाली वैती से संबंधित श्रिम्प फार्म का भी दौरा किया, जो कि रणगिरी जिले के कोंडसर गाँव में श्री चार्ल्स बेंज़ामेन के स्वामित्व में है और पार्टवेन में केकड़ा नर्सरी साइटों में भी दौरा किया गया।

प्रशिक्षुओं के साथ डॉ. विष्णुदास आर. गुणगा और श्री पांडियाराजन थे और वन्नामी कृषि के तकनीकों साथ ही फार्म साइटों में केकड़ा कृषि के बारे में समझाया।

कैप्चर मात्स्यिकी के लिए योजनाओं को लोकप्रिय बनाने हेतु जागरूकता कार्यक्रम

डॉ. टी आर जिबिनकुमार, उप निदेशक को कारला सोसाइटी द्वारा स्वागत करते हुए

एमपीईडीए ने कैप्चर मात्स्यिकी के तहत नई योजनाएं शुरू की हैं और मात्स्यिकी क्षेत्र के विभिन्न पणधारियों के बीच योजनाओं को सार्वजनिक बनाने के लिए क्षेत्रीय प्रभागों द्वारा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया। एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी ने दिनांक 14 जनवरी 2019 को रत्नागिरी में दो जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए - एक कार्ला में और दूसरा तिलक लेन, रत्नागिरी में।

पहला जागरूकता कार्यक्रम कार्ला माछीमार सहकारी संस्था मरियादित के सहयोग के साथ उनके बैठक कक्ष में आयोजित किया गया। सोसाइटी के अध्यक्ष श्री नादिम मोहम्मद सोलकर द्वारा स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कार्यक्रम में सोसायटी के निदेशक बोर्ड के सदस्य और गोआ के मैसर्स एलेक्ट्रोनिकलाब के अधिकारी उपस्थित थे।

डॉ. टी. आर. गिबिनकुमार, उप निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय, एमपीईडीए, रत्नागिरी ने कैप्चर मात्स्यिकी क्षेत्र से संबंधित एमपीईडीए योजनाओं पर एक प्रस्तुति दी और और वित्तीय सहायता का दावा करने के लिए आवेदन की प्रक्रिया के बारे में समझाया और इसके साथ-साथ आवेदन के साथ देने हेतु आवश्यक दस्तावेज के बारे में भी बताए। एमपीईडीए योजना के तहत मेसर्स इलेक्ट्रॉनिकलैब द्वारा आपूर्ति किए गए सैटेलाइट फोन और वीएमएस डिवाइस प्रस्तुत किया गया, जो उपकरण के विनिर्देश और फायदे और खरीद की प्रक्रिया को विस्तृत करता है।

डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार द्वारा योजनाओं की प्रस्तुति

बाद में, डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार ने मुंबई में मेसर्स मराइन एलेक्ट्रिकल्स (भा) लिमिटेड द्वारा आपूर्तित वीएमएस मॉडेल और मत्स्यफेड द्वारा आपूर्तित स्क्वेयर मेष कोड एंड मॉडेल पर एक प्रस्तुति दी। प्रतिभागियों को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के श्रेणीबद्ध विक्रेताओं के संपर्क विवरण के साथ ही साथ मैट्सफैड नेट फैक्ट्री भी प्रदान की गई। जागरूकता कार्यक्रम

इलेक्ट्रोनिकल्लैब के श्री विजय वेंकटेश द्वारा प्रस्तुति

में लगभग 26 मत्स्यन यानों के मालिक और मछुआरे समाज के सदस्यों ने भाग लिया।

दूसरा जागरूकता कार्यक्रम रत्नागिरी तालुका पर्स सीन नेट माचिमाकर मलक संघ के सहयोग से रत्नागिरी में तिलक लेन स्थित उनके कार्यालय में आयोजित किया गया। बैठक की अध्यक्षता सोसाइटी के अध्यक्ष श्री विकास एम. सावंत ने की। श्री जावेद अब्बास होदेकर, सोसाइटी के सदस्य ने जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

सोसायटी के निदेशक मंडल के सदस्य और गोआ के श्रेणीबद्ध उपकरण आपूर्तिकर्ता एजेंसी के प्रतिनिधि मौजूद थे।

डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार, उप निदेशक, एमपीईडीए उप निदेशक प्रभाग, रत्नागिरी, ने यहां भी सभी विवरणों के साथ एमपीईडीए योजनाओं पर प्रस्तुति दी। जैसे कि उन्होंने कराला में किया, डॉ. गिबिनकुमार ने मुंबई में मेसर्स मराइन एलेक्ट्रिकल्स (भा), द्वारा आपूर्ति किए गए मॉडल और मत्स्यफेड द्वारा आपूर्ति किए गए स्क्वेयर मेष कोड एंड मॉडेल पर भी प्रस्तुति दी एलेक्ट्रोनिक उपकरणों के श्रेणीबद्ध विक्रेताओं के संपर्क विवरण और साथ ही साथ मत्स्यफेड को प्रतिभागियों के साथ शेयर किया गया।

मेसर्स एलेक्टरोनिकलाब ने एमपीईडीए योजना के तहत उनके द्वारा आपूर्ति किए गए सैटेलाइट फोन और वीएमएस डिवाइस के प्रक्रिया के बारे में समझाया। उपकरणों के कॉल शुल्कऔर सदस्यता शुल्क पर प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए संदेहों को स्पष्ट किया गया।

जागरूकता बैठक में 12 पर्स सीनियर नेट पोत मालिक भाग लिए और बैठक के दौरान ही 4 सैटेलाइट फोन के ऑर्डर प्राप्त हुए। प्रतिभागियों ने उपकरण विक्रेता से उनकी वार्षिक बैठक के दौरान एक डेमो आयोजित करने का सुझाव दिया,जो 29 जनवरी 2019 को आयोजित होने वाला था। इसे स्वीकार किया गया।

Presentation by Mr. Vijay Venkatesh of Elektroniklab at Purse-Seine Net Fishing Vessel Owners Association office

मत्स्यन के प्रमाणीकरण और अभिरक्षा की श्रृंखला के लिए सहायता हेतु आवेदन पत्र की प्रतियां, प्रमाणन नियमों के अनुपालन के लिए और पर्यावराणानुकूल और चुनिंदा मत्स्यन के तरीकों के साथ मत्स्यन जाल के अनुपालन के लिए उपग्रह आधारित पोत निगरानी प्रणाली (वीएमएस) की स्थापना जैसे कैच रिडक्शन डिवाइसेस (बीडीआर), यानि, स्क्वेयर मेष कोड एंड और कछुए को बाहर करने वाले डिवाइस (टीईडी) आदि कार्यक्रमों के दौरान प्रतिभागियों के बीच वितरित किए गए।

माननीय वाणिज्य मंत्री कोंकण में एमपीईडीए पहल की समीक्षा करते हुए

श्री सुरेश प्रभु, माननीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री के साथ श्री के.एस. श्रीनिवास आईएएस, अध्यक्ष, एमपीईडीए और एमपीईडीए के अन्य अधिकारी

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने कोंकण क्षेत्र में चल रही पहल से संबन्धित एमपीईडीए की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। दिनांक 27 जनवरी 2019 को होटल कोंकण क्राउन, सिंधुदुर्ग के सावंतवाड़ी में आयोजित बैठक में श्री दीपक वसंत केसरकर, गृह (ग्रामीण), वित्त और योजना और और सिंधुदुर्ग विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र, महाराष्ट्र के विधायक उपस्थित थे।

चर्चा में श्री के.एस. श्रीनिवास आईएएस, अध्यक्ष, एमपीईडीए, श्री बी. श्रीकुमार, सचिव, एमपीईडीए और डॉ. एस. कंदन, परियोजना निदेशक, आरजीसीए ने भाग लिया। महाराष्ट्र सरकार और एमपीईडीए आरजीसीए के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन (एमओयू) की प्रगति पर चर्चा की गई। श्री सुरेश प्रभु ने जलकृषि उत्पादों के उत्पादन और निर्यात के संबंध में कोंकण क्षेत्र के समग्र विकास के लिए एमपीईडीए द्वारा की गई पहलों की समीक्षा की।

इस बैठक के बाद, उन्होंने क्षेत्र के कृषकों और निर्यातकों के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की। मंत्री ने उनकी शिकायतों को सुना और एमपीईडीए अधिकारियों से मामले पर विचार करने का अनुरोध किया।

श्री काशीनाथ तारी, सचिव, एमएएफ़ए; श्री अरुण अलसे, प्रगतिशील श्रिम्प कृषक और अध्यक्ष, कुरुंदवाड़ अर्बन बैंक, कोह्लापुर जिले; श्री लक्ष्मण तारि, एक प्रमुख केकड़ा कृषक; और सिंधुदुर्गम ऑर्नामेंटल फिश फार्मर्स के अध्यक्ष श्री सुहास सावंत आदि ने बैठक में कृषकों का प्रतिनिधित्व किया। निर्यातक पक्ष से, मेसर्स आकाश फिश मील एवं फिश ऑइल प्राइवेट लिमिटेड, मेसर्स कारुण्या मराइन एक्स्पोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड और मेसर्स अमीसन फिशरीज के प्रतिनिधि ने मंत्री के साथ इंटरैक्टिव सत्र में भाग लिया।

वेंगुरला के सागरेश्वर तट पर स्थित प्रस्तावित केकड़ा हैचरी स्थल पर एमपीईडीए टीम

एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी द्वारा समन्वित समीक्षा बैठक के बाद, कृषक और निर्यातकों ने श्री के.एस. श्रीनिवास के साथ चर्चा की। चर्चा के बाद, एमपीईडीए-आरजीसीए के अधिकारियों ने वेंगुरला के सागरेश्वर तट पर स्थित प्रस्तावित केकड़ा हैचरी स्थल का निरीक्षण किया।

तूतीकोरिन में पीएमकेवीवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम

कार्यक्रम के प्रतिभागियों के साथ एमपीईडीए के अधिकारी

दिनांक 10 से 12 जनवरी 2019 तक मेसर्स डायमंड सीफूड एक्सपोर्ट्स, कृष्णराजपुरम, तूतीकोरिन में समुद्री भोजन प्रसंस्करण तकनीशियन के लिए एक पीएमकेवीवाई (प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना) प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के आगे, दिनांक 10 दिसंबर 2018 को कंपनी परिसर में एक प्री-स्क्रीनिंग आयोजित की गई, जिसमें 30 प्रसंस्करण श्रमिकों ने भाग लिया। श्रीमती अंजू, सहायक निदेशक, एमपीईडीए ने उम्मीदवारों को अपने कौशल अंतराल का उपयोग करने के लिए अंग्रेजी और स्थानीय भाषा में प्रश्नों के साथ प्री-स्क्रीनिंग प्रश्नावली वितरित की। प्री-स्क्रीनिंग से पहले, उम्मीदवारों से उनकी व्यक्तिगत जानकारी जैसे आधार, बैंक खाता संख्या, पता और अन्य विवरण एकत्र किए गए थे।

प्री-स्क्रीनिंग के बाद, उम्मीदवारों के विवरण एनएसडीसी साइट में अपलोड किए गए, इसके बाद बैच बनाया गया और 30 उम्मीदवारों को आरपीएल (मान्यता प्राप्त प्राथमिक शिक्षा) प्रशिक्षण के लिए नामांकित किया गया। दुर्भाग्य से, एक उम्मीदवार अपरिहार्य स्थिति के कारण मूल्यांकन के दिन उपस्थित नहीं हो सका। आरपीएल प्रशिक्षण से पहले, मेसर्स डायमंड सी फूड एक्सपोर्ट्स के प्रसंस्करण श्रमिकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण की तारीख के बारे में जिलाधीश को सूचित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत श्री लक्ष्मीकांतन, तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए, श्री जेगन, उत्पादन प्रबन्धक, मेसर्स डायमंड सी फूड एक्सपोर्ट्स और डॉ. विनोथ एस रवीन्द्रन, राज्य समन्वयक (एससीओ) नेटफिश द्वारा दीप प्रज्वलित करने के साथ हुई। प्रशिक्षुओं को पीएमकेवीवाई कैप और एप्रन और आवश्यक स्टेशनरी सहित पीएमकेवीवाई किट जारी किए गए।

डॉ. विनोथ एस. रवींद्रन, राज्य समन्वयक (एससीओ), नेटफिश द्वारा वर्तमान परिदृश्य में कार्यक्रम की आवश्यकता और उसी के महत्व पर, कार्यक्रम के एक संक्षिप्त परिचय के साथ दुपहर का सत्र शुरू हुआ।

डॉ. विनोथ एस. रवींद्रन, राज्य समन्वयक (एससीओ), नेटफिश, द्वारा संचालित सत्र में कार्य क्षेत्र और प्रक्रिया मशीनरी की तैयारी और रखरखाव पर भी बल दिया। यह सत्र राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) और एफ़आईसीएसआई द्वारा जारी राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों (एनओएस) के पाठ्यक्रम पर आधारित थे।

दोपहर के सत्र में डॉ. विनोथ ने एनओएस पर आधारित मत्स्या और समुद्री खाद्य के निष्पादन की तैयारी के बारे में विस्तार से बताया। योग्यता पैक-मत्स्यऔर समुद्री खाद्य प्रसंस्करण तकनीशियन - पाठ्यक्रम मैनुअल जिसे पीएमकेवीवाई द्वारा जारी किया गया है - एफआईसीएसआई को प्रशिक्षण सत्रों में कड़ाई से पालन किया गया।

दूसरे दिन, डॉ. विनोथ ने फर्म और समुद्री भोजन के प्रसंस्करण से संबंधित पूर्ण प्रलेखन और रिकॉर्ड पर विस्तृत

विवरण के साथ दोपहर का सत्र शुरू किया।

दोपहर के सत्र में खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता और एनएसडीसी के एनओएस पर आधारित खाद्य उत्पादों के प्रसंस्करण के बारे में जानकारी के साथ एचएसीसीपी पर एक कक्षा चलाई और इस सत्र को श्री लक्ष्मीकांतन, तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए द्वारा संभाला गया।

दूसरे दिन दोपहर का सत्र पूरी तरह से व्यावहारिक प्रशिक्षण और प्रदर्शनों के लिए समर्पित था। व्यक्तिगत स्वच्छता, प्रसंस्करण सामग्री की स्वच्छ हैंडलिंग, मशीनरी और काम के रखरखाव आदि के अच्छा विनिर्माण आचरण (जीएमपी) पर प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा, श्रमिकों को उत्पादन के दौरान पूरी प्रक्रिया पर प्रशिक्षित किया गया। उन्हें उत्पादन प्रवाह चार्ट और संयंत्र में सुरक्षा निर्देशों को पढ़ने और व्याख्या करने के लिए कहा गया। अंतिम दिन 12 जनवरी 2019 को, बाहरी आकलनकर्ता श्रीमती विजया दुर्गा देवी, गुणवत्ता आश्वासन प्रबंधक, मैसर्स वी.वी. मराइन प्रोडक्टस द्वारा एनएसडीसी और एफआईसीएसआई के एनओएस में निर्धारित मूल्यांकन मानदंडों के आधार पर एक आकलन किया गया। श्रीमती अंजू, सहायक निदेशक, एमपीईडीए और एससीओ, नेटफिश तूतीकोरिन की उपस्थिति में मूल्यांकनकर्ता द्वारा सैद्धांतिक और व्यावहारिक आकलन किए गए। मूल्यांकन करते समय फ़ोटो, वीडियो और आवश्यक दस्तावेज़ सहित अन्य मूल्यांकन की कार्यवाही अपलोड की गई।

व्यावहारिक सत्र - मूल्यांकन

जलकृषि में प्रजातियों के विविधीकरण पर जागरूकता अभियान

एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग रत्नागिरी ने नाव मालिकों और मछुआरा समुदायों के लिए दिनांक 10 जनवरी 2019 को रत्नागिरी जिले के जिला मछिमार सोसाइटी, पेटाकिला में मछुआरों की सुरक्षा और चिरस्थाई मात्स्यिकी पर एक जागरूकता बैठक आयोजित की।

बैठक प्रतिभागियों के बीच विविध प्रजातियों के जलकृषि पर जागरूकता प्रदान करने के लिए आयोजित की गई थी। डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार, उप निदेशक, एमपीईडीए, उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी ने निर्यातोन्मुख जलकृषि को विकसित करने में एमपीईडीए की भूमिका और मत्स्य उत्पादन में वृद्धि करने हेतु इस प्रकार के जागरूकता अभियान कार्यक्रमों का संचालन करने वाले एमपीईडीए के उद्देश्य के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने पर्यावरणानुकूल चिरस्थाई जलकृषि और जलकृषि के विविधीकरण की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। डॉ. विष्णुदास गुणगा, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने जलकृषि के विविधीकरण के लिए चयनित विभिन्न उम्मीदवार प्रजातियों को परिचित कराया। एमपीईडीए द्वारा विभिन्न स्थानों पर आयोजित सांस्कृति और प्रदर्शनों पर वीडियो भी दिखाए गए।

कार्यक्रम का परिदृश्य

कार्यक्रम के समापन में प्रतिभागियों को एमपीईडीए के साथ बातचीत करने का मौका मिला। कार्यशाला में भाग लिए गए सभी 35 प्रतिभागियों को इस विषय से संबंधित साहित्य वितरित किया गया।

Advertisement Tariff in MPEDA Newsletter
Rate Per Insertion

Back Cover	(Colour)	Rs. 15,000/-	US$ 250/-
Inside Cover	"	Rs. 10,000/-	US$ 200/-
Inside Full Page	"	Rs. 8,000/-	US$ 150/-
Inside Half Page	"	Rs. 4,000/-	US$ 75/-

* GST @ 18% is extra

Ten Percent concession for contract advertisement for one year (12 issues) or more.
Matter for advertisement should be provided by the advertiser in JPEG or PDF format in CMYK mode.

Mechanical Data : Size : 27 x 20 cms.
Printing : Offset (Multi-colour)
Print Area : Full Page : 23 x 17.5 cm, Half Page : 11.5 x 17.5 cm

For details contact:
Deputy Director (MP) MPEDA House, Panampilly Avenue, Cochin - 682036 Tel: +91 484 2321722, 2311979
Fax: +91 484 2312812, E-mail : newslet@mpeda.gov.in

एमपीईडीए-एमएसी द्वारा उच्च-स्वास्थ्य वाले ब्लैक टाइगर श्रिम्प बीज आपूर्ति का शुभारंभ

श्री के.एस. श्रीनिवास आईएएस, अध्यक्ष, एमपीईडीए द्वारा श्री होर्मिस तरकन को उच्च-स्वास्थ्य वाले काले टाइगर श्रिम्प बीज का उदघाटन बिक्री करते हुए

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) ने दिनांक 18 फरवरी 2019 को वल्लापाड़म के अपने नए बहुप्रजाति जलकृषि कॉम्प्लेक्स (एमएसी) से उच्च-स्वास्थ्य वाले ब्लैक टाइगर श्रिम्प बीज की आपूर्ति शुरू की। एमपीईडीए के अध्यक्ष श्री के.एस. श्रीनिवास आई.ए.एस. ने श्री होर्मिस तरकन, केरल के पूर्व पुलिस महानिदेशक, जो एक प्रगतिशील श्रिम्प कृषक भी है, को एक लाख बीज को देकर बीजों का उद्घाटन बिक्री की।

एमपीईडीए, केंद्रीय सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत एक सांविधिक निकाय, इन बीजों को अपने रिसर्च विंग, राजीव गांधी जलकृषि केंद्र की मदद से विकसित किया है।

आज के समारोह में श्री श्रीनिवास ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजार से सबक ने एमपीईडीए को केरल में ब्लैक टाइगर श्रिम्प के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने कहा कि ब्लैक टाइगर श्रिम्प एक दशक पहले तक भारत में प्रमुख कल्चर्ड श्रिम्प थे। वर्ष 2009 में, देश ने इस प्रजाति के बीजों की अनुपलब्धता का अनुभव करना शुरू कर दिया, यह जलकृषि कृषकों को विदेशी वन्नामी प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया।

"एक प्रजाति पर निर्भरता, वह भी एक विदेशज लंबे समय तक वह चिरस्थाई नहीं होंगे," उन्होंने कहा। "आंकड़े बताते हैं कि प्रमुख वन्नामी - उत्पादक देशों जैसे कि थाईलैंड, वियतनाम और चीन में श्रिम्प की विविधता है, जिन्हें पिछले पांच वर्षों के दौरान गंभीर बीमारी की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यह अंतरराष्ट्रीय श्रिम्प बाजार में श्रिम्प के उनके योगदान को कम करता है।" भारत में ऐसी किसी भी स्थिति से बचने के लिए, एमपीईडीए ने दक्षिण एशिया में ब्लैक टाइगर श्रिम्प के स्थानिक उत्पादन को प्रोत्साहित और विस्तारित करने का निर्णय लिया है। ब्लैक टाइगर का उत्पादन लंबे समय में श्रिम्प निर्यात का समर्थन कर सकता है, श्री श्रीनिवास ने कहा।

हाल ही में, टाइगर श्रिम्प की उच्चतम कीमत और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इसकी बढ़ती हुई माँग इस किस्म की खेती को फिर से शुरू करने के लिए भारत के कृषक समुदाय को प्रेरित किया है। इसे पूरा करने के लिए, देश को ब्लैक टाइगर के रोग मुक्त बीज की आवश्यकता है। यह इस कारण से है कि एमपीईडीए ने अपने मैक का विकास वल्लारपाडम द्वीप में नौ सप्ताह पहले किया है, जिसमें बीज उत्पादन के मुख्य प्रजाति ब्लाक टाइगर श्रिम्प हैं।

एमपीईडीए प्रमुख ने कहा कि नौ एकड़ का यह एमएसी देश में ब्लैक टाइगर श्रिम्प कृषि के पुनरुद्धार का मार्ग प्रशस्त करेगा। इसके अलावा, 7.26 करोड़ रुपये की यह सुविधा ने अन्य मत्स्य प्रजाति जैसे कि गिफ्ट, एशियाई सीबास कोबिया, पोंपानो और कीचड़ केकड़े की फिंगलिंग्स की आपूर्ति शुरू कर दी है। पिछले साल दिसंबर महीने से, एमपीईडीए ने केरल में कृषकों को कुल सात लाख से अधिक मत्स्य बीज की आपूर्ति की।

एमएसी दिनांक 8 दिसंबर को रोग मुक्त नस्लों से सुरक्षित समुद्री खाद्य के उत्पादन की सुविधा के लिए खोला गया था। ब्लैक टाइगर श्रिम्प के लिए एक हैचरी और छह नर्सरी वाले इस अत्याधुनिक सुविधा का उद्घाटन केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने किया।

"पर्यावरणानुकूल और चिरस्थाई श्रिम्प कृषि" पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

अबाद कुलीडांगा, हसनाबाद में श्री प्रदीप मंडल के फील्ड संदर्शन

पश्चिम बंगाल

क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने दिनांक 04-08 फरवरी, 2019 तक उत्तर 24 परगना जिले के बचन मोहनपुर, मिनाखान में "पर्यावरणानुकूल और चिरस्थाई श्रिम्प कृषि" पर 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसका मुख्य उद्देश्य कल्चर प्रथाओं में विविधीकरण पर विशेष जोर देने के साथ कृषकों को चिरस्थाई कृषि, बीएमपी और जलकृषि में आगे के विकास की गुंजाइश पर प्रशिक्षण देना था। कार्यक्रम में 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सिबनाथ दास, सचिव, मोहनपुर समाज कल्याण संघ, मोहनपुर, मिनाखान, उत्तर 24 परगना जिले ने किया। 5-दिवसीय कार्यक्रम के दौरान, श्री धिरित एक्का, सहायक निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता; श्री प्रदीप मैती, फील्ड प्रबन्धक, नाक्सा, और श्री संतनु महतो, फील्ड सहायक अधिकारी, मिनाखान ब्लॉक, पश्चिम बंगाल मात्स्यिकी द्वारा विषय से संबंधित विभिन्न विषयों पर गहराई से व्याख्यान दी। दिनांक 7 फरवरी को उत्तर 24 परगना जिले के हसनाबाद के अबाद कुलीडांगा में श्री प्रोदीप मोंडत के फील्ड में एक फील्ड संदर्शन आयोजित किया गया और और श्री भागवत राउत ने प्रशिक्षुओं को तालाब की तैयारी के लिए फार्म निर्माण, बीज संभरण आदि के बारे में बताया। अंतिम दिन में आयोजित विचार-विमर्श सत्र में प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए संदेहों का स्पष्टीकरण दिया गया। समापन समारोह के बाद प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और वजीफे दिए गए।

क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने पहले भी इसी विषय पर एक और 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया था, इस बार दिनांक 14-18 जनवरी, 2019 तक अ.जाति/अ.ज.जाति प्रशिक्षुओं के लिए उत्तर 24 परगना जिले के शंकरदाहा, संदेशखली में आयोजित किया गया।

अन्य कार्यक्रमों की तरह, यह भी कृषकों को कल्चर के तरीकों में विविधीकरण पर विशेष जोर देने के साथ पर्यावरणानुकूल और जलकृषि में चिरस्थाई कृषि के तरीकों को अपनाने के लिए प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से किया गया था। कार्यक्रम में 19 किसान प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।

श्री धीरित एक्का, सहायक निदेशक, एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री धिरित एक्का और जॉनसन डि'क्रूज़, सहायक निदेशक, एमपीईडीए, श्री प्रदीप मैती, फील्ड प्रबन्धक, नाक्सा, और श्री गौतम बिसाई, फील्ड विस्तार अधिकारी, मिनखा ने कार्यक्रम के कक्षाएँ चलाईं, जिसमें एक फील्ड दौरा भी शामिल था।

श्री मारुति डी. यलिगर, उप निदेशक, एमपीईडीए प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए

गुजरात

वलसाड में MPEDA के क्षेत्रीय प्रभाग ने दिनांक 09-13 जनवरी, 2019 को एपीएमसी हॉल, भरुच में से भरूच जिले के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों के लिए "पर्यावरणानुकूल और चिरस्थाई श्रिम्प कृषि" पर एक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें 21 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य भारच जिले के तटीय गाँवों में श्रिम्प कृषि प्रथा को बढ़ावा देना था।

पहले दिन श्री भाविन एम.जी., फील्ड पर्यवेक्षण ने प्रतिभागियों का पंजीकरण कराया। इसके बाद, कार्यक्रम का उद्घाटन श्री मारुति डी यलिगर, उप निदेशक, एमपीईडीए ने किया। श्री यलिगर ने अपने संबोधन में प्रशिक्षण आयोजित करने का उद्देश्य और श्रिम्प कृषि के विकास हेतु एमपीईडीए की भूमिका के बारे में बताया।

उद्घाटन सत्र के बाद, एमपीईडीए के अधिकारियों ने विषय से संबंधित विभिन्न तकनीकी पहलुओं पर कक्षाएं चलाईं। श्री मारुति डी यालीगर ने श्रिम्प कृषि के शुरुआत और पर्यावरणानुकूल और चिरस्थाई श्रिम्प कृषि में एमपीईडीए की भूमिका के बारे में व्याख्यान दिया। श्री भाविन एम. जी. ने श्रिम्प के जीवन चक्र की पहचान और तालाब की तैयारी के बारे में बात की।

अगले दिन श्री रज़ाक आली, सहायक निदेशक (एई) और श्री मांगंगल ए पाटिल, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी (अक्वा) ने बीज चयन, पैकिंग, परिवहन, वायुजलानुकूलन और संभरण और जल गुणवत्ता प्रबंधन, साइट चयन और फार्म निर्माण पर व्याख्यान दिया। अगले दिन जिलाधीश और मात्स्यिकी विभाग को श्रिम्प कृषि के विकास के लिए सरकारी भूमि के आबंटन भूमि पट्टे पर देने की नीति और प्रक्रिया पर आवेदन प्रस्तुत करना, प्रो-बायोटिक का उपयोग और जलकृषि में प्रतिजैविकियों का दुरुपयोग, फसल और फ़सलोत्तर प्रबंधन, विपणन और जलकृषि में एचएसीसीपी पर श्री मांगंगल ए पाटिल और श्री भाविन द्वारा व्याख्यान दिया गया।

प्रशिक्षुओं को श्री मारुति डी यालीगर द्वारा दिनांक 12 जनवरी को एक फील्ड संदर्शन के लिए ले जाया गया। उन्होंने भरूच जिले के माछासरा गाँव के श्री राजेशकुमार शांतिलाल पटेल के स्वामित्व वाले श्रिम्प फार्म का दौरा किया। फार्म निर्माण, प्रबंधन, जैव-सुरक्षा उपाय, बहत्तर प्रबंधन प्रथाएँ (जीएमपी) और विभिन्न जल गुणवत्ता मापदंडों के परीक्षण के लिए क्षेत्र के उपकरणों का उपयोग से जुड़े व्यावहारिक पहलुओं पर प्रशिक्षुओं को समझाया गया। फार्म पर्यवेक्षक ने प्रशिक्षुओं को अपने अनुभव और वन्नामि श्रिम्प कृषि के विधि के बारे में बताई।

श्री मारुति डी. यलिगर, उप निदेशक, एमपीईडीए, भरूच में व्याख्यान देते हुए

अंतिम दिन एमपीईडीए के अधिकारियों ने शेष महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर कक्षाएं चलाईं। श्री मारुति यालीगर और श्री भाविन ने जलकृषि प्राधिकरण के दिशा-निर्देशों पर रोग निवारण और नियंत्रण पर जलकृषि के लाइसेंस और विविधीकरण के लिए आवेदन कैसे करें इस पर बात की।

कार्यक्रम पूरा करने वाले सभी 21 प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। श्री मारुति डी. यालिगर ने समापन भाषण दिया।

पर्यावरणानुकूल चिरस्थाई जलकृषि और विविधीकरण पर प्रशिक्षण

मत्स्य फार्म के लिए फील्ड संदर्शन

विजयपुरा जिले के भूटानल में कर्नाटक सरकार के अंतर्गत के मात्स्यिकी अनुसंधान सूचना केंद्र (एफ़आरआईसी) ने अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति वर्ग के इच्छुक कृषकों के लिए 'पर्यावरणानुकूल चिरस्थाई जलकृषि और विविधीकरण' पर एक तीन-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। दिनांक 23-25 जनवरी 2019 से एफ़आरआईसी और एमपीईडीए द्वारा संयुक्त रूप से कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

फील्ड संदर्शन - स्कैपी बीजों का पालन

कर्नाटक के विशेष संदर्भ में देश में वर्तमान मत्स्य परिदृश्य पर बात करते हुए श्री विजयकुमार सी यारगल, उप निदेशक, एमपीईडीए ने जलाशय, अंतर्देशीय जल निकायों के महत्व पर जोर दिया, उन्होंने स्कैम्पी कृषि, मूल्यवर्धित उत्पादों और इसकी निर्यात क्षमता के बारे में भी स्पष्ट किया। पैदावार में बहत्तर प्रबंधन प्रथाओं के लिए साइट चयन से मीठे पानी जलकृषि के विभिन्न पहलुओं के बारे में भी उनके व्याख्यान में ज़ोर दिया। डॉ. एस. विजयकुमार, सहायक प्रोफेसर और प्रमुख, एफ़आरआईसी और श्री विजयकुमार अटनूर, सहायक प्रोफेसर, एफ़आरआईसी, भूटानल ने कार्प कल्चर, पॉली कल्चर, तिलापिया कल्चर आदि पर अन्य व्याख्या संभाले। श्री शीशेंद्र शिरोडकर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए ने विभिन्न विषयों जैसे कि तालाब तैयारी, जल कल्चर, प्रोन कल्चर में चारा और चारा प्रबंधन और एमपीईडीए के विभिन्न वित्तीय योजनाओं के बारे में बात की। विभिन्न कृषि योग्य प्रजातियों जैसे सीबास और तिलापिया पर वीडियो फिल्म भी प्रदर्शित की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन एफआरआईसी के तालाबों और ब्रूडर्स खंड की यात्रा की व्यवस्था की गई, जहां प्रशिक्षुओं को फार्म संचालन पर सीधा संपर्क मिला। तीसरे दिन, श्रीपुरी, सहायक निदेशक, मात्स्यिकी विभाग, विजयपुरा, ने विजयपुरा जिले में मात्स्यिकी संचालन की वर्तमान स्थिति और क्षमता पर बात की और विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में बताया।

श्री विजयकुमार सी. यारगल, उप निदेशक, एमपीईडीए और अन्य अधिकारियों ने प्रतिभागियों के साथ इंटरैक्टिव सत्र का नेतृत्व किया, जहां उन्होंने विभिन्न मुद्दों पर संदेह व्यक्त की और इन पर स्पष्टीकरण दिया गया। श्री गोनू चव्हाण, अध्यक्ष, मैसर्स मिनिगारिका सोसायटी, भूटानल ने कहा कि मत्स्य कृषि और जलाशय मत्स्यन के लिए सरकार से वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती है। उन्होंने भविष्य में और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए भी अनुरोध किया। इस कार्यक्रम में भाग लिए गए सभी 22 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उम्मीदवारों को प्रमाण पत्र और वजीफा वितरित किया गया। श्री शेशेंद्र शिरोडकर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

"प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प कृषि पर सीओपी को अपनाना" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र का वितरण

एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, कोंटई ने दिनांक 10-15, दिसंबर 2018 को अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति प्रशिक्षुओं के लिए औराई बेलियाचट्टा गाँव, पुरवा मेदिनीपुर जिले में ''प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प कृषि पर सीओपी को अपनाना'' पर एक पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसका मुख्य उद्देश्य, कल्चर प्रथाओं में विविधीकरण पर विशेष जोर देने के साथ कृषकों को पर्यावरणानुकूल और चिरस्थाई जलकृषि के लिए कृषि के तरीकों को अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना था। कार्यक्रम में 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री रवीन्द्र नाथ बार, पूर्व पंचायत सदस्य ने किया। 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, श्री सूरजित बाग, सहायक निदेशक, डीओएफ़, पश्चिम बंगाल, श्री जॉनसन डि'क्रूज़, सहायक निदेशक, एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता, श्री बिस्वजीत ओझा, फील्ड प्रबन्धक, नाक्साऔर डॉ. देबाशीष रॉय, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए उप क्षेत्रीय प्रभाग, कोंटाई द्वारा विषय से संबंधित विभिन्न विषयों और व्याख्यानों पर गहराई से चर्चा की गई। तीसरे दिन प्रशिक्षुओं को फील्ड परिचय कराने के लिए पास के श्रिम्प फार्म में ले जाया गया।

प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए संदेह को अंतिम दिन आयोजित इंटरैक्टिव सत्र में स्पष्टीकरण दिया गया। समापन समारोह के बाद प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और वजीफे दिए गए।

आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन में एफएओ द्वारा आयोजित मूल्यांकनकर्ता प्रशिक्षण

कार्यक्रम के प्रतिभागी

खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने अपने एक नोडल केंद्र आईसीएआरसीआईएफ़टी में दिनांक 21 से 25 जनवरी तक मात्स्यिकी के लिए भारतीय नेटवर्क के प्रधान अन्वेषकों और प्रयोगशालाओं और रोगाणुरोधी प्रतिरोध निगरानी प्रणाली (एफ़एओ-एटीएलएएसएस) के लिए एफएओ आकलन उपकरण पर पशु एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (आईएनएफ़एएआर) के लिए एक मूल्यांकनकर्ता प्रशिक्षण का आयोजन किया।

पूरे भारत में आईएनएफ़एएआर परियोजना से जुड़े मात्स्यिकी और पशु विज्ञान के विभिन्न आईसीएआर अनुसंधान संस्थानों से लगभग 20 परियोजना जांचकर्ताओं ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। पांच एफएओ विशेषज्ञों में डॉ. जॉय गॉर्डनकोइल, डॉ. माइकल ट्रेलीस, डॉ. फ्रांसेस्का लेट्रोनिको, डॉ. राजेश भाटिया, पूर्व एएमआर सलाहकार और डॉ. राजेश दुबे, राष्ट्रीय परिचालन अधिकारी, एफएओ, भारत प्रशिक्षण सत्र का नेतृत्व किया।

दिनांक 21 जनवरी को आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि डॉ.जे.के. जेना, उप-महानिदेशक (मात्स्यिकी और पशु विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली ने मात्स्यिकी और पशु क्षेत्रों में बीमारी की निगरानी की आवश्यकता पर ज़ोर दिया क्योंकि यह एएमआर प्रबंधन की कुंजी है।

उन्होंने बताया कि भारत में, प्रमुख निर्यात मद श्रिम्प का उत्पादन पिछले दो दशकों से बीमारियों से बुरी तरह प्रभावित है। मात्स्यिकी में प्रारंभिक मृत्यु दर और पशु क्षेत्र में एफ़एमडी प्रमुख खतरे रहे हैं। कृषि क्षेत्र में गहनता और विविधीकरण और जलवायु परिवर्तन का विकास इन क्षेत्रों में होने वाली बीमारियों के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है।

जलकृषि में प्रतिजैविकियों का उच्च मात्रा में उपयोग ने मात्स्यिकी में एएमआर की समस्या को बढ़ा दिया है। उन्होंने पूर्ण रूप से सुसज्जित प्रयोगशाला सुविधाओं और बेहत्तर प्रशिक्षित पेशेवरों के माध्यम से एएमआर के उद्देश्यपूर्ण निगरानी की आवश्यकता पर जोर दिया। वह आशा करते थे कि इस प्रकार का प्रशिक्षण कार्यक्रम एएमआर मुद्दे से निपटने के लिए आवश्यकता-आधारित अंतर को पूरा करेगा।

अपने अध्यक्षीय भाषण में, डॉ. रविशंकर सी. एन., निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफ़टी ने मात्स्यिकी और पशु क्षेत्रों में रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) की निगरानी और मूल्यांकन की आवश्यकता और महत्व और सामान्य रूप में मानव स्वास्थ्य और मात्स्यिकी विशेष रूप से पशु स्वास्थ्य में इसकी भागीदारी पर प्रकाश डाला। उन्होंने कालानुक्रमिक परिप्रेक्ष्य में मात्स्यिकी विकास के लिए संस्थान के योगदान पर भी ज़ोर दिया। प्रारम्भ में, डॉ. एम.एम. प्रसाद, माइक्रोबायोलॉजी किण्वन और जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग के प्रमुख प्रसाद ने सभा का स्वागत किया और सभी एफएओ विशेषज्ञों का विशेष उल्लेख किया। बाद में, पौराणिक प्रकृति से एएमआर के मुद्दों पर प्राथमिकता के मुद्दे के विषय पर एफएओ विशेषज्ञों ने सभा का ध्यान आकर्षित किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम से आपसी लाभ प्राप्त होने की संभावना का आशावादी थे। उपस्थित लोगों को एफएओ विशेषज्ञों द्वारा बताया गया कि अक्टूबर 2018 तक, एफएओ-एटलस ने दुनिया भर में 17 राष्ट्रीय एएमआर निगरानी प्रणाली का आकलन करने के लिए उपयोग किया है और खाद्य विज्ञान क्षेत्र में एएमआर निगरानी प्रणाली के सामंजस्य और बेहतर समन्वय के लिए दुनिया भर में उपकरणों के उपयोग में वृद्धि पर आशावादी थे। *- ICAR-CIFT*

समुद्री खाद्य निर्यात को बढ़ावा देने के लिए मात्स्यिकी पर बजट 2019 का प्रस्ताव

समुद्री खाद्य उद्योग को मात्स्यिकी के लिए अलग विभाग के प्रस्तावों की उम्मीद है मत्स्यन कृषकों के लिए 2% ब्याज सबवेंशन श्रिम्प उत्पादन और निर्यात को बढ़ाने में मदद करता है।

भारत 6 लाख टन के साथ पिछले साल दुनिया में जलकृषि के शीर्ष उत्पादक था और वर्ष 2017-18 में इसका समुद्री खाद्य निर्यात 45,000 करोड़ रुपये के आसपास रिकॉर्ड किया गया। अलग विभाग वर्तमान में मात्स्यिकी पर अधिक ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकता है इसे कृषि मंत्रालय के तहत पशुपालन और डेयरी के साथ जोड़ा जाता है।

"यह मात्स्यिकी और समुद्री खाद्य के लिए प्रशासनिक स्तर पर त्वरित निर्णय लेने में मदद करेगा, निर्यातोन्मुख उद्योग होने से निश्चित रूप से लाभ होगा" एस चंद्रशेखर, जलकृषि पेशेवरों की सोसायटी के अध्यक्ष ने कहा। उन्होंने कहा कि यह उद्योग की लंबे समय तक के लंबित मांग है। "हम आशा करते हैं कि विभाग के अधीन मात्स्यिकी के लिए एक सचिव होगा जिसे हम सीधे संपर्क कर सकेंगे। उदाहरण के लिए, जलकृषि के लिए संगरोध सुविधा जैसी हमारी मांगों को आसानी से निपटाया जा सकता है," भारतीय प्रोन कृषक संघ के महासचिव वी. बालसुब्रमानियम ने कहा।

उन्होंने कहा कि मत्स्यन कृषकों के लिए 2% ब्याज सबवेंशन और कृषकों के लिए 2% ब्याज सबवेंशन आपदाओं से प्रभावित होने से उद्योग को मदद मिलेगी। हाल ही में गाजा चक्रवात ने तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में श्रिम्प कृषकों को आघात पहुंचाया था।

केनी थॉमस, एक निर्यातक, गुजारत में जिनी मरीन ट्रेडर्स के एमडी द्वारा ब्याज अधीनता के प्रस्ताव में स्पष्टता की कमी के बारे में सूचित किया गया। 'घोषणा में कहा गया है कि मात्स्यिकी और पशुपालन करने वाले कृषकों को ब्याज सबवेंशन मिलेगा। लेकिन हमें यह स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि क्या यह नदी मछुआरों पर लागू होता है या सामान्य कृषकों को" उन्होंने कहा।

- Economic Times

Subscription Order / Renewal Form

Please enroll me / us as a subscriber / renew my existing subscription of the MPEDA Newsletter. The subscription fee of Rs. 1000/- inclusive of GST for one year is enclosed vide local cheque/DD No.....
dt..... drawn in favour of The Secretary, MPEDA', payable at Kochi.
Please send the journal to the following address:
.....
.....
Tel No..... Fax : .....
E mail .....

For details, contact:
The Editior, MPEDA Newsletter, MPEDA House, Panampilly Nagar, Kochi - 682 036
Tel: 2311979, 2321722, Fax: 91-484-2312812. Email : newslet@mpeda.gov.in

भारत लगातार चौथे वर्ष भी यू एस के लिए श्रिम्प का शीर्ष निर्यातक

संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए श्रिम्प निर्यात में भारत एक बार फिर उच्च मूल देश बन गया है। भारत ने चौथे सीधे वर्ष में शीर्ष श्रिम्प निर्यात करने के लिए इंडोनेशिया, थाईलैंड, और इक्वाडोर को पछाड़ दिया।

भारत के व्यवसाय मानक के अनुसार अमेरिका के लिए आयातित पूरे श्रिम्प के बत्तीस प्रतिशत भारत से आए, और भारत ने बाजार में अपनी हिस्सेदारी जारी रखी, 2014 और 2017 के बीच 25.2 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) का हुआ, कुल मिलाकर यूएस श्रिम्प की मांग सीएजीआर में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

श्रिम्प टेइल्स पत्रिका के अनुसार अमेरिका में श्रिम्प निर्यात उच्च आपूर्ति मात्रा के कारण कम कीमतों के बावजूद 2018 में 16 प्रतिशत, जो नवंबर 2017 तक तक बढ़ा। विसंगति वर्ष 2019 में श्रिम्प को कवर करने के लिए अमेरिकी सीफूड आयात निगरानी कार्यक्रम के विस्तार के कारण हो सकती है।

"चूंकि सभी बाजार जो यूएस को श्रिम्प निर्यात करते हैं, उन्हें एसआईएमपी द्वारा निर्धारित आवश्यकताओं का पालन करना होगा," यह अपरिहार्य लगता है कि आयातक और उनके आपूर्तिकर्ता देश में उतने ही उत्पाद ले जाने की कोशिश कर रहे हैं, जितना कि इसके प्रभावी होने से पहले कर सकते हैं। विलेम वैन डेर पिजल और केन सैलिंगर, विश्लेषकों ने लिखा।

"भारत से श्रिम्प आयात में हुए मजबूत वृद्धि के बावजूद भी, देश को इंडोनेशिया और इक्वाडोर से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है, जिसका संबंधित देशों में बढ़ते श्रिम्प उत्पादन का समर्थन के साथ वित्त वर्ष 2018 के 10 महीनों के दौरान निर्यात योगदान बढ़ा है" रेटिंग एजेंसी ने कहा।

आईसीआरए के उपाध्यक्ष और कॉर्पोरेट सेक्टर रेटिंग के लिए सेक्टर प्रमुख पवेथरा पोनहिया, उपाध्यक्ष और सेक्टर प्रमुख ने हालिया नोट में भविष्यवाणी की है कि बढ़ती प्रतिस्पर्धा से अमेरिकी बाजार में श्रिम्प की भरमार हो सकती है, और कम कीमतों को जारी रखा जा सकता है।

बिजनेस स्टैंडर्ड के अनुसार पोंनियाह ने लिखा, "आगे बढ़ते हुए, भारतीय निर्यातकों ने इक्वाडोर, इंडोनेशिया और वियतनाम से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना किया।" "प्रमुख श्रिम्प उत्पादन में एक मजबूत उठाव के बाद से सी वाई 2017 ने प्रमुख वैश्विक श्रिम्प निर्यातक देशों के बीच प्रतिस्पर्धा तेज कर दी है। आईसीआरए ने शीर्ष श्रिम्प उत्पादक देशों के बीच श्रिम्प उत्पादन बढ़ाने की उम्मीद करता है जिससे मांग की आपूर्ति की वजह से बेमेल कीमतों में अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है।"

-SeaFood Source

www.mpeda.gov.in

There's no seafood as

Irresistible

as **Indian** Seafood

From the sparkling Indian seas comes the finest seafood in the world. Enjoy it in abundance throughout the year.

You haven't tasted the best seafood, if you haven't tasted Indian seafood.

The Marine Products Export Development Authority
(Ministry of Commerce & Industry, Government of India)
MPEDA House, Panampilly Avenue, Kochi - 682 036, Kerala, India
Phone: +91 484 2311979 Fax: +91 484 2313361 E-mail: ho@mpeda.gov.in

केरल के 'कोल' धान के खेतों को श्रिम्प फार्मों के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए: एमपीईडीए

इस तरह की पहल तटीय राज्य में प्रभावी ढंग से काम करेगी जो जल निकायों से संपन्न है और जहाँ श्रिम्प के लिए उच्च घरेलू मांग है, यह एमपीईडीए के अध्यक्ष के एस श्रीनिवास ने एएसईएनडी केरल 2019 बैठक में उल्लेख किया, जिसका उद्देश्य केरल को एक शीर्ष निवेश स्थान के रूप में प्रदर्शित करना है।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) ने सोमवार को सुझाव दिया कि केरल को यह देखते हुए कि ये वेटलैंड लगभग आधे साल तक पानी के नीचे डूबे रहते हैं, यहाँ के अपने कॉल खेतों को श्रिम्प फार्मों के रूप में उपयोग करना चाहिए। इस तरह की पहल तटीय राज्य में प्रभावी ढंग से काम करेगी जो जल निकायों से संपन्न है और जहाँ श्रिम्प के लिए उच्च घरेलू मांग है, यह एमपीईडीए के अध्यक्ष के एस श्रीनिवास ने एएसईएनडी केरल 2019 बैठक में उल्लेख किया, जिसका उद्देश्य केरल को एक शीर्ष निवेश स्थान के रूप में प्रदर्शित करना है।

मात्स्यिकी और जलकृषि दुनिया भर के करोड़ों लोगों के खाद्य, पोषण, आय और आजीविका के महत्वपूर्ण स्त्रोत बने हुए हैं। भारत में उच्च स्तर के मत्स्यन ने हाल के दशकों में कई लोकप्रिय लक्ष्य प्रजातियों को ढहने के कगार पर पहुंचा दिया है। राज्य में श्रिम्प की खेती उच्च तकनीकी विशेषज्ञता वाले मजदूरों का भी एक मजबूत क्षेत्र है, उन्होने यह केरल सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग विभाग, केरल राज्य औद्योगिक विकास निगम, केरल औद्योगिक संवर्धन और केरल औद्योगिक अवसंरचना विकास निगम द्वारा आयोजित 'एमएसएमई और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में अवसर' नामक एक सत्र में सूचित किया।

बेहतर मात्स्यिकी के लिए, केरल को आंध्र प्रदेश का अनुकरण करके एक कानून लागू करना चाहिए, जिसमें प्रतिजैविकियों का उपयोग वर्जित है, एमपीईडीए प्रमुख ने कहा। उन्होंने यह भी कहा कि केरल के मत्स्यन बन्दरगाह बेहतर बुनियादी ढाँचे का विकास करते हैं और इस तरह की विकास परियोजनाओं को पीपीपी या बीओटी आधार पर चलाया जा सकता है। भारतीय ईईजेड से 4.4 मिलियन टन की अनुशंसित क्षमता के साथ भारतीय मत्स्या लैंडिंग वर्ष 2012 में 3.94 मिलियन टन के सबसे शीर्ष स्तर को छू गई, अधिकारियों ने बताया। भारत दुनिया में समुद्री पकड़ मत्स्य उत्पादन के मामले में सातवें स्थान पर है और यह क्षेत्र चार मिलियन मछुआरों की आबादी का समर्थन करता है।

- financialexpress

सरकार द्वारा संभावित निर्यातकों का समर्थन करने के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रम, ऐप की शुरुआत

वाणिज्य और उद्योग मंत्री सुरेश प्रभु ने संभावित निर्यातकों के लिए प्रशिक्षण, परामर्श और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के अवसरों का दोहन करने के लिए उनका हाथ थामने के लिए, "कभी भी कहीं भी" ऑनलाइन निर्यात जागरूकता पाठ्यक्रम शुरू किया, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने एक विज्ञप्ति में कहा।

प्रभु ने हाल ही में उनकी अध्यक्षता में व्यापार मंडल (बीओटी) की बैठक में पाठ्यक्रम की घोषणा की। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफ़टी) की 'निर्यात बंधु' योजना के तहत ऑनलाइन पाठ्यक्रम वित्त पोषित है और और भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के साथ साझेदारी में श्रुरू किया गया है, मंत्रालय ने कहा।

डीजीएफटी की वेबसाइट पर उपलब्ध विवरण के अनुसार, निर्वत बंधु योजना उद्यमियों को प्रशिक्षण, परामर्श और सूचना सत्र के माध्यम से भारत में डीजीएफटी कार्यालयों के नेटवर्क के माध्यम से निर्यात करने में मदद करती है। प्रतिभागियों को निर्गत बंधु योजना के तहत पूर्व पाठ्यक्रम पूरा होने तक निर्यात आयात प्रबंधन में एक प्रमाण पत्र प्राप्त होगा।

प्रभु ने इस अवसर के दौरान डीजीएफ़टी का मोबाइल ऐप भी लॉन्च किया, जिसमें निर्यातकों को अपनी शिकायतों को साझा करने, विभिन्न लाइसेंसों के लिए आवेदन करने, नवीनतम व्यापार सूचनाओं, परिपत्रों, विदेश व्यापार नीति और व्यापार मेलों से संबंधित जानकारी के अलावा अपनी स्थिति देखने की अनुमति देते हैं। "बेहतर लॉजिस्टिक्स, व्यापार सुगमता, मानवीय इंटरफ़ेस को कम करने और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए डिजिटलीकरण के प्रयासों, जीएसटी के कार्यान्वयन, स्किलिंग के माध्यम से क्षमता निर्माण आदि के माध्यम से सरकार भारत को प्रभावित करने वाले मंदी (निर्यात में) को रोकने में सक्षम है" वाणिज्य सचिव डॉ. अनूप वधावन ने पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

डीजीएफटी के महानिदेशक आलोक चतुर्वेदी ने एंड-टू-एंड आईटी सक्षम और पेपरलेस प्रक्रिया के लिए सरकार की प्रतिबद्धता का दावा करते हुए कहा कि वाणिज्य विभाग ने डीजीएफटी की संपूर्ण आईटी प्रणाली के पुनरुद्धार हेतु एक परियोजना को मंजूरी दी है।

भारत का निर्यात जनवरी, वर्ष 2018 में 3.74% बढ़कर 26.36 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि जनवरी 2018 में इंजीनियरिंग, चमड़ा, और रत्न और आभूषण सहित प्रमुख क्षेत्रों के कम प्रदर्शन के कारण 25.41 बिलियन डॉलर था, पीटीआई ने वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों को देखते हुए बताया।

दूसरी ओर, जनवरी में व्यापार घाटा 14.73 बिलियन डॉलर बढ़ा, दिसंबर 2018 की तुलना में यह 13 बिलियन डॉलर था। हालांकि, जनवरी 2018 के 15.67 बिलियन डॉलर की तुलना में घाटा कम हो गया है।

- financialexpress

आंध्र प्रदेश: मात्स्यिकी विभाग द्वारा जलकृषि में सिंगापुर, वियतनाम के साथ हाथ मिलाना

आंध्र प्रदेश में जलकृषि क्षेत्र को और बढ़ावा देने के उद्देश्य से, राज्य सरकार अंतरराष्ट्रीय प्रथाओं को अपनाने के लिए विभिन्न देशों के साथ सहयोग की संभावना को तलाश रही है। राज्य मत्स्य विभाग ने पहले ही सिंगापुर, नेथरलैंड, वियतनाम और कुछ अन्य देशों के विभिन्न संगठनों के साथ इस संबंध में चर्चा की है।

जानकारी के अनुसार, सहयोग जलकृषि उत्पादों की बेहतर कल्चर हेतु ज्ञान-साझाकरण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए हैं। ''हम खेती, हैचरी, प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, कोल्ड चेन विकास, चारा प्रौद्योगिकी और अन्य जैसे क्षेत्रों में भी सहयोग को देख रहे हैं।

उभरते सहयोग से न केवल राज्य में जलकृषि उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी, बल्कि कृषकों को अधिक निर्यात के अवसर भी मिलेंगे, ''एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया। अधिकारी ने कहा कि पिछले चार महीनों में उक्त देशों की टीमें पहले ही राज्य का दौरा कर चुकी हैं और गभीर सागर मत्स्यन के लिए एक संयुक्त साझेदारी बनाने पर भी चर्चा हुई। जबकि सिंगापुर के साथ सहयोग जलकृषि में प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण और श्रिम्प निर्यात में होने की उम्मीद है, नेथरलैंड के साथ सहयोग चारा प्रौद्योगिकी और कोल्ड-चेन विकास के क्षेत्र में होंगे।

''वियतनाम के साथ, हम संयुक्त रूप से गभीर सागर ट्यूना मत्स्यन और मूल्यवर्धित उत्पादों पर ज्यादातर काम करेंगे,'' अधिकारी ने कहा। सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए मात्स्यिकी विभाग के समझौतों में हस्ताक्षर करने की संभावना है। यह स्मरण करना चाहिए कि विभाग ने राज्य में आनुवंशिक रूप से उन्नत तिलापिया मत्स्य के उत्पादन बढ़ाने हेतु पहले ही यूएसए-आधारित फिशिंग कंपनी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हुए हैं।

रिकॉर्ड के लिए, मात्स्यिकी क्षेत्र राज्य जीएसडीपी में 7.4 प्रतिशत का योगदान देता है और देश के मात्स्यिकी उत्पादन में 24.24 प्रतिशत का क्षेत्र हिस्सा है। उत्पादन का लगभग 66 प्रतिशत हिस्से के साथ आंध्र प्रदेश श्रिम्प का सर्वोच्च उत्पादक भी है।

- The New Indian Express

ट्यूना लॉन्ग लाइनर एवं गिलनेट मत्स्यन यानों का फ्लाग ऑफ

मात्स्यिकी विभाग, तमिलनाडु सरकार के मछुआरे लाभार्थियों के लिए कोचीन शिपयार्ड द्वारा डिज़ाइन और निर्मित किया गया चार (4 सं.) टूना लॉन्ग लाइनर एवं गिलनेट्टर मत्स्यन यानों का पहा बैच को यहाँ तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एडप्पाड़ी के पलनिस्वामी ने फ्लाग ऑफ किया।

इस संबंध में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड में एक समारोह आयोजित किया गया, जिसमें श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष - कोचीन शिपयार्ड और कोचीन शिपयार्ड के कर्मचारियों की की उपस्थिति में श्री जॉनी टॉम आईएएस, अतिरिक्त निदेशक, तमिलनाडु मात्स्यिकी, श्री. के.एस. श्रीनिवास आईएएस, अध्यक्ष एमपीईडीए, और मत्स्यन उद्योग से जुडे विभिन्न संगठनों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। यहाँ मंगलवार को शिपयार्ड रिलीज़ ने कहा।

कोचीन शिपयार्ड भारत सरकार और तमिलनाडु सरकार की वित्तीय सहायता से भारत सरकार के नीली क्रांति योजना के तहत गभीर सागर मत्स्यन यानों में ट्रौलिंग मत्स्यन नावों के विविधीकरण योजना के तहत कुल 16 ट्यूना लॉन्ग लाइनिंग और गिलनेट्टिंग मत्स्यन यानों का निर्माण कर रहा है इन यानों का डिज़ाइन आधुनिक नेविगेशन और संचार उपकरण और उन्नत नेट हाउलिंग और लाइनर वाइन के साथ अत्याधुनिक उच्च गुणवत्ता मत्स्यन यानों के रूप में बनाया गया है। अन्य सुविधाओं में शामिल हैं, गैलिस, बायो-टॉयलेट, प्रशीतित समुद्री जल प्रणाली और मत्स्य पकड़ को संरक्षित करने के लिए स्टेनलेस स्टील क्लैडेड पीयूएफ़ इंसुलेटेड फिश होल्ड। ये नौकाएँ अधिक चिरस्थाई गभीर सागर मत्स्यन उपनिवेश करने हेतु भारतीय मत्स्यन समुदाय के लिए एक बड़ा वरदान हैं।

- United News of India

PRAWN FEED

VANNAMEI FEED

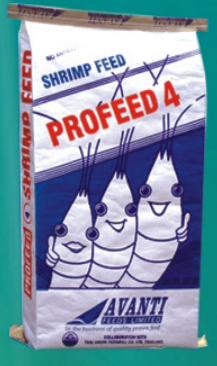

BLACK TIGER SHRIMP FEED

BLACK TIGER SHRIMP FEED

AVANTI FEEDS LIMITED

In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports

An ISO 9001: 2008 Certified Company

Aiding sustainability & reliability to Aquaculture

Shrimp Hatchery

Feed Plant - Gujarat

Prawn Feed & Fish Feed

Prawn Processing & Exports

INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN

- GREATER APPETITE
- HEALTHY & FASTER GROWTH
- LOW FCR WITH HIGHER RETURNS
- FRIENDLY WATER QUALITY

AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS

AVANTI A.H.C.P. RANGE

Thai Union
IN COLLABORATION WITH:
THAI UNION FEEDMILL CO., LTD., Thailand.

Avant Miner Mate — Chelated Trace Mineral Supplement

Avant Saldo Mixtos — Marine Mineral

Avant D-Flow — Water Quality Improver

Avant Pro W — Soil & Water Probiotic

Avant Bact — Gut Probiotic

Avant AmmoniAbsorb — Ammonia Absorber

Avant Life — Oxy-Generator

Avant Immupak — Immunity Enhancer

Avant Catcher

Corporate Office: **Avanti Feeds Limited**
G-2, Concord Apartments 6-3-658, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com

Regd. Office: **Avanti Feeds Limited.**
H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.

No. KERENG/2013/61656

Innovative safeguards against complex risk

At Integro, we understand the risks involved with Seafood. We are committed to simple solutions to complex risks through our expertise.

Protect yourself with bespoke Rejection/Transit Insurance solutions from Integro Insurance Brokers.

Contact us to experience our expertise:
Raja Chandnani
Phone: **+44 20 74446320**
Email: **Raja.Chandnani@integrogroup.com**
www.Integrouk.com

INTEGRO UK
INSURANCE BROKERS